सरल जैन-ग्रन्थ-माला, जबलपुर

द्वारा प्रकाशित—

सरल-जैनधर्म

[चारों भाग]

जैनधर्म की इन सचित्र और सरलतम सर्वांग सुन्दर पुस्तकों की उपयोगिता समस्त जैन-संसार ने मुक्तकंठ से स्वीकार की है और यही कारण है कि बिना किसी विशेष प्रयत्न के प्रायः समस्त जैन पाठशालाओं, स्कूलों और विद्यालयों में आज ये पुस्तकें पाठ्य-पुस्तकों के रूप में पढ़ाई जा रही हैं। इनके लेखक समाज के प्रमुख विद्वानों में से हैं। आपने अभी तक इन पुस्तकों को न मंगाया हो तो अब विलम्ब न करें और इन्हें अपने बालकों के हाथों में देकर उनके ज्ञान-वर्द्धन में सहायक बनें।

हमारे सर्वांग सुन्दर और नितान्त उपयोगी

अन्य प्रकाशन:—

द्रव्य-संग्रह (सटीक एवं सचित्र)		।–)
छहढाला	”	।–)
रत्न-करण्ड श्रावकाचार	”	।–) व ।≡)
भाषा नित्यपूजन सार्थ	”	।)

भक्ताम्मर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, छहढाला, जिनेन्द्र पंच-कल्याणक और सरल-विनती-संग्रह भी बालकों को कण्ठाग्र कराने की मूल पुस्तकें हमारे यहाँ मिलती हैं। बालकोपयोगी समस्त पुस्तकें सरल जैन ग्रन्थमाला, जबलपुर से ही मंगाइए।

कवर साहित्य प्रेस, जबलपुर में मुद्रित

प्रेममाला-पुष्प २१।

चम्पा।

हिन्दुओंके घरोंका एक सच्चा और शिक्षाप्रद चित्र!

लेखक,
कृष्णलाल वर्मा

प्रकाशक—
अमीचंद्र जैन
मालिक-प्रेममाला कार्यालय
गोहाना (रोहतक)

प्रथम संस्करण। [मूल्य ।=)

मुद्रकः—रा. चिंतामण सखाराम देवळे, मुंबईवैभव प्रेस,
सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज़ बिल्डिंग,
सँढर्स्ट रोड गिरगाव-बम्बई.

प्रकाशकः-अमीचंद्र जैन
मालिक, प्रेममाला कार्यालय गोहाना (रोहतक.)



गोहानानिवासी लाला अमीचंदजीकी मातुश्री ।

समर्पण ।

पुण्यमयी माजी,

आप मुझे दो वर्षसे अपने प्रेम-वृक्षकी सायामें रखती हैं,
अपने पुत्र पौत्रोंकी भाँति मेरा लालन-पालन करती हैं,
कभी हृदयमें दुर्भाव नहीं लाती हैं और सदा मेरे
शुभकी आकांक्षा किया करती हैं । इसी उप-
कारके वश होकर अन्यप्रकारकी सेवाके
अयोग्य यह लेखक अपनी लिखित इस
पुस्तकको भक्ति पुष्पांजलिकी भाँति
आपके कर कमलोंमें सादर
समर्पण करता है ।

प्रस्तावना ।

पाठक पाठिकाओ, इस पुस्तकमें जितनी भी बातें लिखीगई हैं वे सब एक दो परिच्छेदकी बातोंको छोड़कर सब सच्ची हैं । इसमें मेरी नवीन कल्पना कुछ नहीं है । मैंने आज तक कोई स्वतंत्र उपन्यास नहीं लिखा । यह मेरा पहिला ही प्रयत्न है । मैंने इसको लिखकर कुछ महाशयोंको बताया । सबने भिन्न २ सम्मतियाँ दीं । कोई कहने लगा इसमें, कुछ रस नहीं है, कोई कहने लगा इसमें आध्यात्मिक बातें नहीं है और कोई कहने लगा इसमें अस्वाभाविक करुणारसकी बातें बहुत हैं । कोई कहने लगा, इसका इसी तरह छपाना व्यर्थ है और कुछ इसमें काल्पनिक घटनाएँ उत्तमताके साथ लिखीजानी चाहिए जैसी कि बंगाली उपन्यास लेखक लिखा करते हैं । किसीने कहा इसमें प्रेमकी रसीली बातें जब तक न होंगी तबतक कोई नहीं खरीदेगा किसीने कहा पुरुष इतने हल्के नहीं हो सकते, और कोई कहने लगा जो कुछ है सो ठीक है छपवा दो ।

मेरे भी दिलमें यही बात जची कि इसको छपवा दूँ और अच्छी बुरी बतानेका फैसला अपने पाठकों पर छोड़ दूँ ।

इस प्रसंगमें मैं अपने मित्र देवरी निवासी शिवसहायजी चतुर्वेदीको धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता जिन्होंने प्रूफ़ देखनेमें मुझे बहुत ही सहायता दी है ।

अपने पाठक पाठिकाओंसे विनती करता हूँ कि वे इस पुस्तकके विषयमें अपनी सम्मति, चाहे वह प्रतिकूल हो या अनुकूल, किसी समाचार पत्र द्वारा या प्राइवेट तौर पर, लिखकर प्रदान करें । मैं उनका बहुत ही अहसान मानूँगा और अगले संस्करणमें यदि उचित होगा तो उनकी सम्मतिके अनुसार परिवर्तन या परिवर्धन करूँगा ।

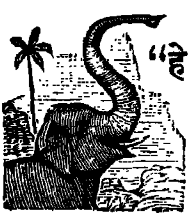
गोहाना (रोहतक)
ता. १-९-१६.

निवेदक,
कृष्णलाल वर्मा ।

चम्पा ।

प्रथम परिच्छेद ।

हाय करूँ हिवड़ो जले, जंगल भी जल जाय ।
पापी जिवडो नाजले, जामें हाय समाय ॥
फलकने दे दिया है रंज मुझको एक आलमका ।
रुला देता है दुश्मनको भी सदमा मेरे मातमका ॥



"हे अन्तर्यामी ! हे परमात्मन् ! हे भगवन् ! नाथ अब तो क्षमा करो । प्रभो ! अब मुझसे दुःख नहीं सहा जाता । विश्वेश ! अब तो हो चुकी ! मेरी धैर्य परीक्षा खूब हो चुकी ! दीनानाथ ! अबतो बालिका पर दया करो । मेरी मौसीको सुमति दो । मेरे पिताको अच्छा मार्ग दिखाओ । ...." बोलते २ बालिकाका हृदय भर आया उसकी आँखोंमें पानी दिखाई देने लगा

---

१ आकाश. २ संसार. ३ दुःख. ४ विपत्ति, संकट.

और मोती बन २ कर बाहिर निकलने लगा। इतनेहीमें झम झम करते हुए एक प्रौढ़ाने प्रवेश किया। उसके झाझनकी झनकारसे सारा मन्दिर गूँज उठा। उसने आकर ॐ जय जय कहकर नमो अरिहंतादि दर्शन पाठ पढ़ा वेदीकी चौकीपर चावल चढ़ाए, प्रतिमाके सामने नमन किया, और वह परिक्रमा देकर जहाँ शास्त्र होता था, वहाँ जा बैठी।

दिल्ली, संसार विख्यात दिल्ली, लाखों अपने सपूतोंका खून पीनेवाली दिल्ली, बड़े २ सूरमाओंकी जनयित्री दिल्ली, बड़े २ बुद्धिमानोंकी प्रसविनी दिल्ली, बड़े २ धर्मात्माओंकी उत्पादक दिल्ली, अपने पुत्रोंको अपने सिंहासनपर बिठा सारे संसारमें उनका आतंक बिठवानेवाली दिल्ली, उनके गर्व करने पर उनका परित्याग कर, उनको कमजोर बना, म्लेच्छोंको प्रेमपूर्वक स्थान देनेवाली दिल्ली, यवनोंसे अपने पुत्रोंका संहार करानेवाली दिल्ली, पापाचारका प्रसार करने वाली दिल्ली, नादिरशाहसे 'कत्ले आम' की आज्ञा दिला हिन्दुओंको आ बाल वृद्ध कत्ल होते हुए शान्तिसे देखनेवाली दिल्ली, विषयासक्त बना सारे भारतको मिट्टीमें मिलानेवाली दिल्ली, आज भी वैसेही अपनी शोभा लिए खड़ी है। बड़ी २ महल अटारियोंसे शोभित हो रही है।

उक्त घटना इसी दिल्लीके बड़े दरीबेमें एक जिनमन्दिर है वहाँ हुई थी।

चम्पा भी दर्शन कर दुर्गादेईके पास जा बैठी। शास्त्र पूर्ण हुए सब स्त्री–पुरुष अपने २ घर गये मगर दुर्गादेई और चम्पा अब तक

अपनी जगहसे नहीं उठीं। दोनों न मालूम किस विचारमें बैठी रहीं। थोड़ी देरके बाद दुर्गादेई बोली–

"चम्पा! तू मंदिरमें क्या बोल रही थी? भगवान्‌से क्या विनती कर रही थी? बता आज कल तुझे क्या दुःख है? क्या तेरी मौसी अब भी तुझसे अच्छा वर्ताव नहीं करती? क्या मनोहरलाल भी तेरे साथ कुछ सख्ती करता है?"

चम्पाका दुर्गादेईकी बातोंसे फिर हृदय भर आया उसकी आँखोंमें फिर पानी दिखाई दिया। वह चुप बैठी रही। एक शब्द भी मुँहसे नहीं बोली। यह दशा देख, दुर्गादेईके हृदयमें करुणा दौड़ने लगी। उसने चम्पाको हाथ पकड़कर अपनी बगलमें खींचली और उसके मुँह पर हाथ फेरती हुई कहने लगीः– "रो मत पुत्री! रो मत; माताएँ संसारमें सबकी मरती हैं। हाँ यह दुःखकी बात अवश्य है, कि तेरी माता बहुत ही जल्दी मर गई! मगर बेटी! इसमें दोष किसका? जो कुछ तेरे भाग्यमें लिखा था वह तुझे मिला।"

चम्पाने शान्तिसे उत्तर दियाः–"नहीं मैं माताके लिए कुछ इतनी दुःखी नहीं हूँ। मैं अच्छी तरहसे समझने लगगई हूँ, कि मनुष्य उतने ही समय तक जीवित रहता है, जितने समयतक उसका आयु कर्म पूर्ण नहीं होता है, मगर........" कहते २ बालिकाके हृदयमें फिर न मालूम किस विचारने आ डेरा जमाया–न मालूम किस खयालने उसके हृदयको रोक लिया। उसका सीना धड़कने लगा। आँखोंसे टपटप करके पानी गिरने लगा। दुर्गादेई अपनी सहेली

की पुत्रीकी यह दशा देखकर बहुत दुखी हुई। उसका भी प्रेमसे हृदय भर आया। उसकी भी आँखोंमें पानी दिखाई देने लगा। उसने प्रेमसे चम्पाका सिर चूम लिया और उसे गोदमें लिटाकर कहा:—"पुत्री! तू क्यों ऐसी घबराती है? जो कुछ तुझे दुःख है सो कह। मैं तेरे दुःख दूर करूँगी। बेटी! तेरीमाँ गोमती मर गई मगर अब तक मैं जीवित हूँ। तू लेशमात्र भी चिन्ता मत कर। मैं जब तक बैठी हूँ तुझे किसी बातकी तकलीफ नहीं होने दूँगी। बता तुझे तेरी मौसी तो कुछ तकलीफ नहीं देती है?"

मौसीके दुःख देनेकी बात सुन, चम्पा जोर जोरसे डसूके भरने लगी। उसकी आँखें नलकी तरह पानी गिराने लगीं। दुर्गादेईका सारा लहँगा भीग गया। इसकी भी आँखोंसे पानी बह चला। थोड़ी देरमें चम्पाका दुःख कम हुआ। दुर्गादेई भी शान्त हुई। उसने फिर कहा:—"पुत्री! बहुत हो चुकी अब मत रो। रोनेसे दुःख दूर नहीं होगा। प्रयत्नसे दुःख मिटेगा। बता क्या दुख है?" चम्पा बोली:—"माता? क्या बताऊँ? मुझे जो कुछ दुःख है सो बस मैं ही जानती हूँ। कहनेसे क्या लाभ है? क्योंकि मेरे भाग्यमें जो कुछ लिखा है वह मैं ही सहूँगी। अन्य सहनेको नहीं आवेगा। तब क्यों मैं अपनी जिव्हाको किसीके अन्याय वर्णन कर कलुषित करूँ? अहा! महात्मा तुलसीदासजी क्या अच्छा कहते हैं—

"तुलसी पर घर जायके, दुःख न कहिये रोय।
अपना भरम न खोइये, होनी हो सो होय॥"

अतः माता तुम मुझे विवश न करो। मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ कि तुम

मेरे साथ इतना प्रेम रखती हो; परन्तु माता! कुछ भी हो मैं अपने माता पिताकी अपने ही मुँहसे कदापि कोई शिकायत न करूँगी।

"नहीं चम्पा! नहीं" गोमतीने कहा: "मैं शिकायत नहीं करवाती हूँ। बल्के मैं तो यह चाहती हूँ, कि किसी कारणसे यदि तेरे माता पिताकी बे ध्यानी हो और तू कष्ट उठाती हो तो मैं मनोहरलालजीसे कह कर तेरा कष्ट दूर करवा दूँगीं।" न मालूम मनोहरलालके नाममें क्या भयानकता थी कि, सुनते ही चम्पा काँप गई। उसका चहरा भयसे पीला होता दिखाई दिया। न मालूम किस बातकी यादने चम्पाका कलेजा हिला दिया। वह कठपुतली-की तरह आँखों पर हाथ रख कर दुर्गादेईकी गोदमें इस तरहसे लेट गई मानों उसके सामने कोई भयानक दैत्य खड़ा हुआ है।

दुर्गादेई चम्पाकी इस दशासे बड़ी ही विस्मित हुई। मगर लड़कीकी उक्त बातोंको सुननेसे फिर उसका साहस न हुआ कि वह चम्पासे और कुछ पूछती। थोड़ी देरतक दुर्गादेई न मालूम किन २ विचारोंके उतार चढ़ावमें निमग्न रही। फिर बोलीः—"देखा कैसी सियानी लड़की है? अहा! मैं कैसी प्रसन्न होऊँगी जब कि मैं इसे अपनी पुत्रवधू देखूँगी। मगर यह कैसे होगा? गोमती मर गई। मनोहरलाल अब कुछ और ही ढंगका आदमी हो गया। वह न मालूम क्यों गोपालके साथ इसकी सगाई करनेसे इन्कार करता है? खैर। हे भगवान् यदि चम्पाका मेरे गोपालके साथ ब्याह हो गया तो मैं आपके छत्र चढ़ाऊँगी, आपकी पूजा करवा-ऊँगा और फूलकी जगह पखड़ी आपके नाम पर भेट करूँगी।"

दुर्गादेई इस तरह गुनगुना रही थी कि इतनेमें एक स्त्री दर्शन करने आई। उसने चम्पाको दुर्गादेईकी गोदमें इस भाँति पड़े देख-कर आश्चर्यसे आवाज दीः—"कौन ? चम्पा !" मगर उत्तर नदारद। वह स्त्री चम्पाके उत्तर न देनेसे दुर्गादेईके पास चली गई और बोलीः—

स्त्रीः—" क्यों बाई आप कौन हैं ? और चम्पा आज इस तरह क्यों पड़ी है ? "

दुर्गादेईः—"क्या बताऊँ बाई ? तुम मुझे क्या जानों ? हाय ! मैंने तो जबसे चम्पाकी माँ गोमती मरी है तबसे कभी इधर पैर भी नहीं दिया है। और वैसे भी हम दो तीन बरससे पहाड़ी पर रहने लग गये हैं इससे यहाँ आने जानेका विशेष काम नहीं पड़ता। हाँ तुम भी यहाँ तो नई ही आई हुई मालूम देती हो। कहो घर कहाँ है ? "

स्त्रीः—"हमारा घर तो यहीं है। मगर कुछ बरसोंसे हम कमाईके लिए बम्बई चले गये थे, अब काम खासा चलगया है इस लिए वहाँ एक मुनीम रख दिया है और हम यहीं रहने लग गये हैं। हाँ तुम तो बताओ तुम्हारा और इस लड़कीका क्या संबंध है ? "

दुर्गादेईः—" यह मेरी सहेली गोमतीकी लड़की है। मेरा और इसकी माँका बहुत ही प्रेम था। विशेष क्या कहूँ ? बस यूँ समझलो कि हम एकप्राण दो शरीर थीं। यदि दिनमें एक वार वह मुझे और मैं उसे नहीं देख लेती थी तो हमारा खानापीना जहर हो

जाता था। (एक निश्वास डालकर) हाय ! यदि आज वह जीती होती तो..........."

कहते २ दुर्गादेई न मालूम क्यों रुक गई ? फिर थोड़ी देर ठहर कर बोली:—" बताओ तुम इसे कैसे जानती हो ? "

स्त्री:—" यह तो बिलकुल मेरे घरके पास ही रहती है। इसके और हमारे मकानकी दीवारें बिलकुल मिली हुई हैं। "

दुर्गादेई:—" तब क्या तुम बता सकती हो कि चम्पाको क्या दुःख है ? और वह अपने बापके नामसे इतनी क्यों डरती है ? अभी मैंने मनोहरलालका नाम लिया था इसीसे यह इतनी डर गई है, और चुपचाप मेरी गोदमें पड़ी है। "

मनोहरलालका नाम सुनते ही इस स्त्रीके मुखसे भी एक आह निकल पड़ी, और राम २ कह कर बोली—" मुझसे उसके दुष्ट-कृत्यका वर्णन नहीं किया जाता। तुम लड़कीका कमीज उठा-कर देखलो। "

दुर्गादेईने ज्योंही चम्पाका, कमीज खींचा त्योंही वह एक हाय ! करके उठ बैठी। ऐसा मालूम होता था कि उसे बहुत तकलीफ हुई है।

दुर्गादेईने कहा:—" चम्पा मुझे देखने दे कि तेरी पीठमें क्या हुआ है ? " "नहीं कुछ नहीं है " चम्पाने उत्तर दिया।

चम्पाके मना करते रहने पर भी दुर्गादेईने जबरदस्ती उसकी पीठ परसे कमीज हटाया। ज्योंहीं उसने कमीज हटाया वह एक चीख मारकर दूर जाखडी हुई। उसका सिर घूम गया। वह सिर

पकड़कर वहीं बैठ गई । थोड़ी देरसे बोली:—"क्या मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ ? क्या सचमुच ही चम्पाकी पीठ बैतोंकी मारसे सूज रही है ! क्या मनोहरलालने चम्पाको पीटा है ? नहीं २ ऐसा नहीं हो सकता" दुर्गादेईने फिर अपने विचारोंको ठीक करनेके लिए—यह निश्चय करनेके लिये कि कहीं उसका केवल खयालही खयाल तो नहीं है, चम्पाका कमीज उठाकर धैर्यके साथ उसकी पीठ देखी। उसे साफ दिखाई दिया कि चम्पाकी पीठका चमड़ा बैतोंकी मारसे उड़ गया है, उसकी खालमें ताजा घाव लग रहे हैं। कहीं २ से खून निकलकर वापिस जम गया है और कहीं २ से चमड़ी पकने लग रही है। चम्पाकी यह दशा देखकर दुर्गादेई रो पड़ी। चम्पा भी किसी तरहसे अपनेको नहीं थाम सकी । वह भी दुर्गादेईसे चिमट कर आँसुओंकी धारा बहाने लगी। नव आगत स्त्रीकी आँखोंमें भी पानी भर आया। पाठक ! हमारे भी हृदयमें इस निर्बोध, अनाथ या सनाथ (खैर कुछ भी हो) बालिकाके शरीरकी दशा देखकर गहरी चोट लगी है, सीना उमड़ा आता है, आँखें आँसू बहाना चाहती हैं, चलो अब इनका हाल आगे नहीं देखा जाता। फिर कभी इसकी वास्तविकता खोजेंगे कि चम्पाकी यह दशा क्यों हुई है।

द्वितीय परिच्छेद.

जो जन जग सेवा करे, निश्चै पावे सोय
मान, द्रव्य, सन्तान सब, यामें फरक न होय ।



जिस घरमें स्त्री सुशिक्षिता और उत्तम स्वभाववाली होती है उस घरमें, सौ दुःखके कारण आने पर भी, प्रायः विशेष शोक व्याप्त नहीं होता। यही दशा मनोहरलालके घरकी भी थी। गोमती हर समय स्वामीका मन रखती थी। उसे कभी किसी बातका कष्ट नहीं होने देती थी। जब मनोहरलालको माता पिताका वियोग हुआ था-जब उसके मस्तक पर फिरनेवाले प्रेमल हस्त संसारसे उठ गये थे, तब भी गोमतीने मनोहरलालको नाना भाँतिसे धैर्य बँधा उसका मन शान्त किया था। पति ही देव है, पति ही स्वर्गदाता है, पतिही स्वर्ग सुखकी खानि है और पति ही संसार सागरसे पार लगानेके लिए जहाज़ है। यह भावना हर समय वह भार्या करती थी। पतिकी इच्छाके विपरीत कभी वह एक पाँव भी नहीं रखती थी। सदा मनोहरलालके लाभदायक और स्वास्थ्यकर भोजन बनाती प्रेमके साथ उसे खिलाती, अतिथिको खिलाती और तब आप स्वयं खाती थी। अड़ोस पड़ोसके सारे ही व्यक्ति उससे प्रसन्न थे; क्योंकि वह जब कभी जिस किसीको कष्टमें देखती थी, तत्काल ही उसकी सहायता करती थी। सारे महल्लेके लोग उसे एक पवित्र

देवी मानते थे। सच है संसारमें वही व्यक्ति पूज्य और बड़ा होता है जो दूसरोंकी भलाईमें अपना काल बिताता हैं।

मनोहरलालकी आयु लगभग ४० वर्षके होगई मगर अबतक उसे सन्तान मुखावलोकनका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इनके घरमें साधारण गृहस्थियोंकी भाँति सब तरहका आराम था। खानेपीने पहिनने आदि किसी बातकी कमी नहीं थी। शरीरसेभी दोनों नीरोग थे। इतना होनेपर भी इस दम्पतिका मन सुखी नहीं था। इन्हें अहर्निशि एक बातकी चिन्ता सताया करती थी। और वह चिन्ता यही थी कि घरमें इन्हें, लाला (पिता) या अम्मा (माता) कहकर पुकारनेवाला कोई नहीं था। इसी चिन्ताके मारे बेचारोंका शरीर प्रतिदिन सूखता जाता था। हजारों देवी देव मनाये, हजारों भैरू भोप पूजे, हजारों झाड़े फूँके करवाये। हजारों जादूटोणें किये अभिप्राय यह है, कि जिस किसीने जो कुछ बताया वही, इन्होंने अन्ध-श्रद्धाके साथ, धर्माधर्मके विचार रहित किया। यहाँ तक कि दया धर्मपर कलङ्क लगानेवाली हिंसा करते भी नहीं हिचकिचाये एकके कहनेसे कालिका माताके नामपर एक बकराभी चढ़वा दिया।

पाठक पाठिकाओ! जरा सोचो कि यदि देव देवियाँ और भैरूँ भोपेही सबकुछ देने लग जाँय तो फिर बेचारे कर्मकी कहाँ चले? संसारका यह अटल सिद्धान्तकि जो कुछ होताहै कर्मसे ही होताहै." झूठाहो जाय। दुनियासे धर्मका नाम उठजाय कोई एक दूसरेकी परवाह, न करे; क्योंकी उन्हें कर्मका डर न रहे। वे बेधड़क पाप

करें और फिर भैरू भोपोंको मनाकर अपना पाप धो डालें। यानी पापका फल जो दुःखहै उसको देवी देवताओंकी सहायतासे नष्ट करदें। मगर ऐसा नहीं होता। प्रत्येकको पूर्वकृत्य कर्मोंका फल नियत अवधी पर्यन्त भोगना ही पड़ताहै। तदनुसार मनोहरलाल और उनकी धर्म पत्नी गोमतीको भी यह वेदना भोगते रहना पड़ा। हजार देवोंको मनाने और कालीको बलि चढ़ाने पर भी वे संन्तान-दर्शन न कर सके।

अन्तमें दोनोंने हारकर सब टण्टे छोड़ दिये। अहर्निशि परोपकारमें अपना काल बिताने लगे। एकवार दिल्लिमें प्लेगका बड़ा भारी दौरा हुआ। शहर सारा खाली होगया। लोग अपने प्राणोंके भयसे जंगलोंमें झौंपड़ियाँ बाँध, तम्बू तनवा रहने लगे। प्लेगकी बीमारीको लोग संक्रामक रोग (एक दूसरेके लगजानेवाली बीमारी) बताते हैं। इस हेतुसे कभी कोई रुग्ण हो जाता तो लोग उसके पास नहीं जाते, यहाँ तक कि कई तो अपने माता पिता तकको छोड़ कर चले गये। लोगोंने मनोहरलाल व इनकी स्त्रीको भी घर छोड़ कर जानेके लिए कहा। गोमतीने उत्तर दिया—"हमारी आयु क्रमशः बीतती जा रही है। इतनी आयु हो जाने पर भी अबतक हमें सन्तान नहीं मिली। जान पड़ता है पूर्व भवमें हमने कोई बड़ा भारी पाप किया था इसी हेतुसे हमें सन्तान विहीन रहना पड़ा है। अतः अब हम अपनी आयुको व्यर्थ नहीं खोवेंगे। आयुकर्मकी मर्याद जब खतम होगी तब जहाँ जाकर रहेंगे वहीं मर जाएँगे अन्यथा इस बीमारीमें रहने पर भी हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। दूसरे दो

दिन पहिले या पीछे आखिर सबको मरना हीं है तब फिर जीनेकी चिन्ता कैसी ? कौनजाने किस दिन हमारे प्राण पखेरु उड़ जाएँगे, और जैसे आये थे वैसे ही चले जाएँगे। इससे तो यही श्रेष्ठ है कि कुछ सुकृत्य ही करलें। आपलोग आनन्दसे शहेर बाहिर रहिए हम तो यहीं रहेंगे और इस रोगसे दुखी जीवोंकी, जिनको कि उनके कुटुम्बी छोड़कर चले जाते हैं, सेवाकरेंगे व उनको सुख पहुँचाएँगे। " गोमतीके उदार विचार सुन लोग दिग्मूढ हो रहे फिर किसीने उन्हें घर छोड़ देनेकी बात कहनेका साहस न किया। ये दोनों पति पत्नी अपने तन मन और धनसे, अनाश्रितों की सेवा में लग गये। गोमती, रोगीकी सेवा–शुश्रूषा करती थी और मनोहर-लाल बाहिर से ओषधि लाना आदि कार्य करता था।

इनकी सेवासे कई मरते हुए बच गये। वे उन्हें आशिसें देने लगे। और गोमतीकी देवीकी भाँति आज्ञा पालने लगे। गोमतीने उनमेंसे कइयोंको उपदेश देकर इस कार्यमें लगा दिये। यह बात बिलकुल ठीक है कि केवल कहनेवालेकी अपेक्षा करके दिखानेवालेका असर बहुत ही ज्यादा होता हैं।

घड़ीमें दश बजनेवाले हैं महल्लेमें अभी लोगोंका आना जाना प्रारंभ नहीं हुआ है। गोमती दर्शन करके घर जा रही है। इसी समय उसको " हाय! मर गया। अरे! कोई बचाओ पानी पिलाओ। हाय! मेरी ही कमाईसे सुखोपभोग कर रहेहो और आज मुझे ही इस दीनावस्थामें छोड़कर चले गये हो। अरे! कोई बचाओ! पानीके बिना मेरा दम निकला जा रहा है। "

कराहटने रोक दी। वह दृष्टि उठाकर चारों ओर इधर उधर देखने लगी। मगर कहीं कोई घर उसे खुलाहुआ दिखाई नहीं दिया। वह आश्चर्यके साथ इधर उधर देखती हुई आगे चलने लगी इतने ही में फिर उसके कानमें आवाज आई। "हाय! मरा बचाओ! पानी पिलाओ।" गोमती उसी आवाज़की ओर चली गई। आगे जाकर क्या देखती है कि एक मकानके दोताले लग रहे हैं और अन्दर एक व्यक्ति पड़ी हुई रो रही है। गोमती की आँखोंमें आँसू भरआये। वह कहने लगी:—" हाय! दुष्ट संसार! अरे दुष्ट पुरुषो! जिस पिताने अपने–खूनका पानी बनाया, जिसने सैंकड़ों तरहके कष्ट सहनकर तुम्हारे लिए सुखोपभोगका सामान इकट्ठा किया उसीकी आज यह दशा! छिः! छिः!! ऐसे पुत्रोंसे तो ये सन्तान विहीन रहता तब भी अच्छा था।,, अब गोमती वहाँ ज्यादा देर न ठहर कर तत्काल ही घर गई। उसने सब हाल मनोहर लालसे कहा। और कहा:— " पुलिसवालोंको बुला लाओ। ताला तुड़वाकर वृद्ध हजारीलालजीको निकालेंगे और उनकी सेवाकरेंगे।"मनोहर-लालने ऐसा ही किया।

अन्दर जाकर देखाकि वृद्ध हज़ारीलाल, हज़ारोंरुपयोंका मालिक बीसियोंको अन्नवस्त्र देनेवाला आज पानीके लिए भी बिल बिला रहा है। सुख शय्यापर सोनेवाला आज आँगनमें एक फटी दरीपर पड़ा हुआ अपने जीवनके दिन पूर्ण कर रहा है। स्वस्थावस्थामें जिसकी आँखके इशारेसे बीसियों पुरुष कार्य करते थे उसके चिल्लाते रहने परभी आज कोई पानी पिलानेके लिए भी उसके पास

नहीं आता । यही कालका प्रभाव है—यही कर्मकी गति है—यही संसार है । जो सुख दुःखादि सब दशाओंमें अपने भावोंको शुद्ध और श्रद्धालु रख अपने आत्मचिन्तवनमें लगा रहता है वही सुखी होता है।

गोमतीने तत्कालही हजारीलालको बॉइल्डवाटर (गरम करके शुद्ध किया हुआ पानी) पिलाया । इतनेहीमें मनोहरलाल एक किरायेकी डोली ले आये और वे हजारीलालको उसमें लिटाकर अपने घर ले गये ।

गोमतीके पवित्र कर स्पर्शसे—उसकी सेवासे हजारीलालकी कुछ स्थिति अच्छी होगई। गोमतीको अपनी सेवा करती हुई देखकर वृद्धको बड़ा आश्चर्य हुआ । वह कहने लगा:—

" क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ या साक्षात स्वर्गमें आ गया हूँ ? नहीं स्वर्ग तो बड़ा ही सुखोत्पादक होता है मुझे यहाँ तो कुछ पीड़ा भी जान पड़ती है । हाँ ठीक है स्वप्न ही देखता हूँ। ऐसा कब हो सकता है, कि मेरे बेटे-बहू तो मुझे छोड़ जावें और अन्य स्त्री-पुरुष मेरी सेवा...." बीचहीमें गोमती बात काट कर बोली:- " पिताजी, हमें अन्य मत समझिए । हम भी आपहीके पुत्र-वधू हैं । आप स्वप्न नहीं देख रहे हैं; किन्तु साक्षात् ही आप गोमतीसे सेवा करवाकर उसे कृतार्थ कर रहे हैं ।"

गोमतीकी नम्र शान्त मुद्रा देखकर प्रेमसे हजारीलालकी आँखोंमें आँसू आ गये । उसके इस श्रेष्ठतम आचरणसे उसका हृदय पानी होगया । उसके चित्त पर बड़ा असर हुआ । उसका मिथ्यात्व विलुप्त हुआ और समझने लगा कि संसारमें परोपकार ही एक सर्वोत्कृष्ट वस्तु है । मैं भी यदि जीवित रहा तो ऐसे ही सेवा

कार्यमें अपना जीवन बिताऊँगा और मर गया तो अभीसे निश्चय करता हूँ कि मैं आगामी भवमें ऐसा ही करूँगा । हजारीलाल ऐसे श्रेष्ठ विचार, कर रहा था इतने ही में उसे यमराजने आदबाया और उसका आत्मा उक्त श्रेष्ठ विचार करता हुआ इस पर्यायका परित्याग कर चल दिया ।

इसी भाँति सेवा करते कराते प्लेगके दिन बीत गये । धार्मिक कार्योंका-जनसेवाका फल बड़ा ही उत्तम होता है जो सन्तति गोमतीको हजारों देवी-देव मनानेसे और हजारों भैरूं मोपोंके पूजनेसे भी नहीं मिली थी, उस ही सन्तति प्राप्तिकेलक्षण प्लेगके पूर्ण होने बाद गोमतीको दिखाई दिये । संसारका यह सिद्धान्त सर्वथा ठीक है कि यदि तुम किसीकी आशा पूर्ण करोगे, किसीका कष्ट मिटाओगे तो तुम्हारी भी आशा अवश्य पूर्ण होगी ।

योग्य समय पर गोमतीने पुत्री रत्न प्रसव किया । मनोहरलाल व इनके सगे सम्बन्धी सब प्रसन्न हुए । पड़ोसियोंने आनन्द मनाया लड़कीका नाम चम्पा रक्खा गया । गोमती, बचपन हीसे चम्पाको उत्तम शिक्षा देती रही । चम्पा भी अपनी माताके उत्तम व्यवहारसे और उसकी उत्तम शिक्षासे श्रेष्ठ स्वभाववाली बनने लगी । इस सात आठ वर्षकी अल्पायुमें ही, क्षमा, दया, जनसेवा, धैर्य, उत्साह आदि गुण उसके अन्दर दिखाई देने लगे । गोमतीने उसे पढ़ना लिखना भी सिखा दिया ।

तृतीय परिच्छेद ।

नजर ये इन्कलाब[1], सराए दहर[2]में आए ' जामिन[3] '
के है गम[4]का महलवो दिल, जो घर था शादमानी[5]का
हजरते[6]-दिल आप हैं किस ध्यानमें
मरगये लाखों इसी अरमान[7]में ॥



सूर्य नारायण मलिनमुख हो शनैः२ अस्ताचलकी ओर बढ़े जा रहे हैं । दूकानदार अपनी दूकानें बन्दकर घर जा रहे हैं । मनोहरलाल भी कपड़ेके थान अन्दर डाल दूकानका ताला बन्द कर घरके लिए रवाना हुआ है । सूर्यकी तरह आज उसका चहरा भी मलिन मालूम हो रहा है । आज उसके अन्दर सदाके समान चपलता और उत्साह दिखाई नहीं देते । इसका हँसता हुआ वदन (चहरा) किसी गहन चिन्तासे खिन्न हो रहा है । मनोहरलाल जल्दी २ चलकर घर पहुँचा । वहाँ जाकर क्या देखता है कि गोमती बेसुध होकर पड़ी है, उसका श्वास जोरजोरसे चल रहा है । पास उसकी एक मात्र कन्या बैठी हुई रो रही है । कभी वह अपनी माँके मुँह पर मुँह रखती है कभी उसके आँचलमें अपना मुँह छिपाती है, कभी बैठ जाती है और कहती है:—" माँ तुम बोलती क्यों नहीं हो ? हाय ! मुझे कितनी जोरकी भूख लग रही है । तुम उठकर खानेको क्यों नहीं देती ?"

---

१ परिवर्तन २ संसार ३ कविकानाम ४ रंज ५ खुशी ६ मनमहाशय ७ आशा

अहा ! बेचारी भोली भाली बालिका क्या जानती थी कि उसकी माता उसकी एक भी बात नहीं सुन रही है, वह अपनी हृदयसर्वस्व चम्पाको भूल गई है ।

मनोहरलाल यह हालत देखकर उल्टे पैरों वापिस लौटा । दौड़ा हुआ वैद्यराज उमाशंकरके पास गया । उनको गोमतीका सब हाल सुनाया और पांच रुपये उनके पैरों में रख दिये । उमाशंकर एक अच्छे अनुभवी और प्रतिष्ठित वृद्ध वैद्य हैं । इन्होंने हिकमतमें अच्छा नाम पाया है । वैद्यराजका घर मनोहरलालके घरसे कुछ विशेष दूर नहीं है । वे थोड़ी ही देरमें मनोहरलालके मकान पर पहुँच गये । उन्होंने जाकर गोमतीकी दशा देखी मगर चिन्ह अच्छे नहीं दिखाई दिये । कुछ देर तक वह चुपचाप बैठे सोचते रहे । मनोहरलालने उन्हें ऐसे चुप बैठे देख कर आतुरतासे पूछा:—" क्यों महाराज, कैसा हाल है ? " वैद्यजीने निराशा सूचक शब्दोंमें उत्तर दिया:—" अच्छा हाल है " " क्या जीनेकी आशा है या नहीं ? "

" एक आना है और पन्द्रह आना नहीं । "

हाय ! हाय ! वैद्यजीकी यह बात सुनते ही मनोहरलालके सिर पर शिला टूट पड़ी । उसकी अर्द्धाङ्गिनी, उसकी हृदयकी अधिकारिणी अब सदाके लिए उससे बिदा होनेवाली है, इस विचारने उसका सिर चकरा दिया । मनोहरलालकी आँखोंके सामने अँधेरी छागई । वह सिर पकड़कर चुप चाप जमीन पर बैठ गया । बेचारी चम्पा स्थिर भावसे बैठी हुई देखती रही । उसे कुछ मालूम नहीं हुआ कि क्या हो रहा है !

वैद्यराजने दो तीन घण्टे बैठकर कई तरहके उपचार किये; परन्तु सब निरर्थक हुए । अन्तमें वैद्यराज हारकर उठ खड़े हुए और यह कहकर चले गये कि रोग असाध्य हो गया है ।

चम्पा माताके पास भूखी ही सो रही । मनोहरलाल गोमतीकी चारपाई पर जा बैठा । थोड़ी देरतक उसके मुखकी ओर टकटकी लगा कर देखता रहा । लेम्पके प्रकाशमें गोमतीका चहरा साफ दिखाई दे रहा है । उसका खिला रहनेवाला चहरा मुर्झा रहा है; उसके मुख पर मलिनता छा रही है । उसके मुख मण्डल पर गिरे हुए काले बाल हवाके लगनेसे कुछ ऊपर उठते हैं, और वापिस गिरते हैं वे ऐसे दिखाई देते हैं मानो काले नाग गुलाबके पुष्पों पर लोट रहे हैं । खिड़कीमेंसे आकर पड़ता हुआ चन्द्रमाँका प्रकाश गोमतीके चहरेको देखकर हँस रहा है, और कह रहा है कि "तू मेरी कलाके उतर जानेकी और पन्द्रह दिन तक मेरे निष्प्रभ रहनेकी हँसी करती थी और अपने रूप यौवनके नशेमें सदा मत्त रहती थी पर जरा देख आज तेरी क्या दशा है? मैं पन्द्रह दिनके लिए तेजहीन होता हूँ मगर मेरे हृदयमें फिर सतेज होनेकी आशा रहती है, मैं फिर कला सहित हो जाता हूँ पर तुझे क्या फिर यौवन प्राप्तिकी आशा है? क्या मुझे लज्जित करनेवाले तेरे मुख पर फिरसे कान्ति आनेवाली है? बोल बोल अब बोलती क्यों नहीं है? अपने मुखको इन सर्पोंकी ओटमें क्यों छुपाती है?" चन्द्रमाँकी बातें सुनकर बेचारी गोमती लज्जावश अपने बालोंसे मुख ढाँके पड़ी है और दुःखसे दीर्घ निश्वासें डाल रही है ।

अरे! रे!! निर्दय चन्द्र! तू बेचारीको इस समय वृथा मत सता। जली पर नमक मिरच मत लगा। अरे! मरतेको मारना और उसपर फबतियाँ जड़ना क्या देवत्व है? पाठक यदि गोमती भी अपने रूप यौवनका गर्व नहीं करती तो आज वृथा इसे यह दुःख क्यों झेलना पड़ता।

मनोहरलालने गोदावरीका सिर उठाकर अपनी गोदमें रख लिया, उसके चहरे पर पड़े हुए बाल हटा दिये और धीरे २ उसके मुँहपर हाथ फेरने लगा। बैठे २ न मालूम उसे क्या विचार आया। उसकी आँखोंसे अश्रुकी बूँदें निकल कर गालों पर बहती हुई दिखाई देने लगीं। वह थोड़ी देर बाद अपने आप कहने लगा:—"प्यारी! क्या तुम मुझे अकेला ही छोड़कर जाओगी? अब तुम बिना मेरे दुःख सुखकी कौन खबर लेगा? मैं जब दूकानसे आऊँगा तब दर्वाजे पर खड़ा हुआ कौन मार्गकी ओर टकटकी लगाए मेरी बाट जोहता रहेगा? किसे मैं अपने दिलकी बात सुनाऊँगा? मेरे दूकानसे आनेमें देर होने पर कौन मेरे लिए चिन्तातुर होगा? कौन कन्या या उसकी माताको मेरी खबर करने भेजेगा? कौन मेरे पीड़ा होने पर मेरी सेवामें रत रहेगा? कौन मेरे दुःखकी चिन्तामें लम्बी २ रातें आँखोंमें निकालेगा? हाय! प्रातःकाल ही कौन कोकिल विनिन्दित-मधुरवाणीसे मुझे आकर कहेगा कि अब उठो, दिन निकल आया है। हाथ मुँह धोकर स्नान करलो—गरम पानी तैयार है। दर्शन कर आओ मैं दूध गरम कर रखती हूँ............।" बोलते बोलते मनोहरलालका गला रुँध गया। उसकी जिव्हाने

अब विशेष दुःखोद्गार निकालना सहन नहीं किया । उसका हृदय कष्टसे विशेष जलने लगा । बेचारी आँखोंने सहायता की । चक्षुओंसे उष्ण २ अश्रु झर २ झरने लगे । थोड़ी देरमें मनोहर लालकी आँखोंसे गिरते हुए आँसुओंके द्वारा गोमतीका सारा मुँह भीग गया । इसी दशामें रात बीतगई । घड़ीमें पाँच बज गये । पक्षी सूर्यनारायणके आगमनके समाचारसे मधुर २ गान कर नाचने लगे । आकाश लाल होगया । प्रातःकालीन स्वास्थ्यकर शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलने लगा । खिड़कीमेंसे मनोहरलालने सूर्यकी लालिमा देखी । उसे देखकर बोलाः—" अरे !दुष्ट सूर्य ! तुझे लज्जा नहीं आती तू रातभर मेरी प्यारीका वियोगकरा छुपकर मेरे हृदयका रक्त पीता रहा अब क्या मुँह दिखाता है ? राक्षस ! देख अब भी तेरे ओष्ठ लोहूसे भेर हुए हैं । अरे ! जल्दी अपना मुँह छिपा ओष्ठोंका रक्त पोंछ, नहीं तो दुनिया तेरे पैशाचिक कार्यको देखकर तुझसे घृणा करने लगेगी । इतनेहीमें मनोहरलाल क्या देखता है, कि गोमती कुछ हिलने लगी है । देखते ही देखते गोमतीने आँखें खोल दीं । हम नहीं कह सकते कि उसकी यह थोड़ी बहुत अच्छी स्थिति प्रातःकालीन वायुसे हुई या उसके शीतल मस्तकपर मनोहरलालकी आँखोंसे पड़े हुए उष्ण आँसुओंसे हुई । कुछ भी हो गोमतीकी स्थिति इस समय अच्छी है । वह बोलीः—

" क्या तुमको सारी रात बैठे हो गई है ? " मनोहरलालने कुछ उत्तर नहीं दिया । वह टकटकी लगाए उसके मुँहकी ओर देखता रहा । वह फिर बोलीः—"उत्तर क्यों नहीं देते हो ? देखो

तुम्हारी आँखे लाल होगई हैं, चेहरा मुर्झा रहा है, मेरी तुम इतनी चिन्ता क्यों करते हो ? यह क्या तुम्हारा कमीज गीला क्यों है ? क्या तुम रो रहे थे ? " सुनकर मनोहरलालकी आँखोंमें फिर पानी भर आया। उसने फ़ौरन् मुँह फेर कर आँसू पौंछ डाले। और कहा:—" कहो अब तुम्हारी कैसी हालत है ? " "ठीक है " गोमतीने उत्तर दिया:—" मगर अब मुझे मालूम होता है कि मैं विशेष नहीं जीऊँगी। मेरी चम्पाको तुम अच्छी तरहसे रखना ।

हाँ चम्पाका व्याह जल्दी ही कर देना। क्योंकि वह बेचारी अपनी सासके प्यारमें रहकर अपनी माँको भूल सकेगी। घरमें रहेगी तो उसकी सौतेली माँ उसे तकलीफ देगी। हाय ! मैं अपनी चम्पाको सौभाग्य........ " बोलते २ गोमतीकी आँखोंमें आँसू भर आये। थोड़ी देर ठहर गई । फिर बोली:—" चम्पाको सौभाग्यका तिलक लगाये नहीं देख सकी। देखो मेरी बात याद रखना। भूल मत जाना। ऐसा न हो कि मेरी........" बीचहीमें मनोहरलाल बोल उठा:—" तुम कह क्या रही हो ? अब तुम अच्छी हो भगवान्ने चाहा तो सब कुछ अच्छा होगा। तुम जल्द ही आरोग्य हो जाओगी और अपने हाथोंसे चम्पाका व्याह करोगी। अगर दैवयोगसे तुम मर भी गई तो मैं कभी दूसरा व्याह नहीं करूँगा—सदा विधुर रहूँगा।" यह सुनकर गोमती अशक्त होनेपर भी कुछ मुस्कराई उसकी मुस्कराहटमें लज्जा थी, सुख था, प्रेम था, मगर अविश्वास भी था। उसने उत्तर न देकर मुस्कराहटमें ही कह दिया कि:—"तुम भूले हुए हो, तुम मुझे धोखा देते हो, पुरुषोंसे कभी ऐसा नहीं हो सकता कि वे

यावज्जीवन अपनी स्त्रीके मरजाने पर विधुर रहें। यह काम केवल स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। यह सच्चा प्रेम केवल स्त्रियाँ ही दिखा सकती हैं।" मनोहरलाल फिर कुछ न बोल सका। वह टक-टकी लगाकर उसका मुँह देखता रहा। थोड़ी देरमें गोमती यकायक उठ बैठी और:—"चम्पा, चम्पा" पुकारने लगी। चम्पा अभी अभी ही उठ कर अपना मुँह धो रही थी वह आवाज सुन, दौड़कर माताके पास आई। गोमतीने चम्पाको हाथ पकड़ कर अपनी गोदमें बिठा ली और उसका मस्तक चूमा, फिर कहा:—"बेटी जा सुखी रह, सदा अपना जीवन धार्मिक कार्योंमें बिताना, परोपकार करनेको अपना मुख्य धर्म समझाना। कोई तुझे लाख सतावे तो भी तू सदा उसकी भलाई ही करना। द्वेषका बदला प्रेमसे चुकाना। लाखों संकटोंके आनेपर भी अपनी आत्माको पतित न होने देना। दुःखमें आर्तध्यान न करना, सुखमें फूल मत जाना। हमेशा स्मरण रखना कि यह भी गुजर जायगी।" यह कह कर उसने चम्पाको अपनी गोद-से उठा दी। फिर उसने घूमकर मनोहरलालकी तरफ प्रेम भरी दृष्टिसे देखा और अर्हन्त सिद्ध कहती हुई सो गई। सोते ही उसे एक हिचकी आई और उसका जीवन—हंस इस अस्थिमाँसके पींजरेको छोड़कर सदाके लिए चल दिया।

चतुर्थ परिच्छेद

ये नसीहत याद रखना उम्र भर,
मर्दसे औरतको लाज़िम[2] है हज़र[3]।
क्या करें सब्रके[4] अब सबका यारा[5] ही नहीं,
सब्र [6]किस्मतमें तो [7]खालिकने उतरा ही नहीं ॥ १ ॥



मनोहरलाल फूट २ कर रोने लगा। उसका रोना सुन कर आसपासके मनुष्य इकट्ठे होगये। जातिके लोगोंको यह हाल मालूम हुआ। वे भी एक एक करके वहाँ जमा हो गये। चम्पा अपने मामाके यहाँ भेज दी गई। लोगोंने मनोहरलालको ढारस बँधाया। उसने रोना बंद किया और सब व्यवहारिक कार्य पूरे किये। शव श्मशानमें पहुँचाया गया। चिता बनाकर मनोहरलालने उसमें आग लगाई। आगने तत्काल ही भयंकर रूप धारण किया। उसकी लपटें आकाशसे बातें करने लगीं व फड़ फड़ शब्द करती हुई उच्च स्वरसे कहने लगी:—" ऐ मनुष्यो, तुम क्यों वृथा ही अपने धन, जन, रूप, यौवन, बल पुरुषार्थ और हुकूमतके नशेमें चूर फिरते हो? क्यों वृथा पापाचारमें रत रहते हो? अरे! यह दुर्लभ मनुष्य-देह तुम्हें प्राप्त हुई है उसे व्यर्थ मत खोओ। इसे श्रेष्ठ कामोंमें लगाओ। यदि तुम्हारे पास धन है तो उसे निराश्रित विधवाओं और अनाथोंकी रक्षामें व्यय करो। जन हैं तो उनको साथ लेकर

१ शिक्षा २ आवश्यक ३ बचाव-परहेज़ ४ धैर्य ५ वश ६ भाग्य ७ परमात्मा-

देश, समाज और धर्मकी सेवा करो । यदि बल है तो उसे निर्बलोंको, दुष्टोंके–अत्याचारियोंके–हिंसकोंके–पंजेसे छुड़ानेके कार्यमें लाओ, संसारको सुखी बनानेमें अपना पुरुषार्थ लगाओ और हुकूमत पाई है तो देशमें सुलह शान्ति फैलानेका प्रयत्न करो । याद रक्खो एक दिन इसी भाँति तुम भी मेरे ग्रास बनोगे और कुछ भलाई न करोगे तो अन्तमें हाथ मल २ कर पछताओगे ।"

उधर अग्नि अपना काम कर रही है । इधर मनोहरलाल बेचारा घुटनोंमें सिर देकर चिन्तामें निमग्न हो रहा है । साथमें आये हुए लोग पाँच पाँच सात सातकी टोली बनाकर अलग २ बैठे हुए, बातें कर रहे हैं । आइए हम भी इसमें से एक मण्डलीकी बातें सुने ।

एकः–"सुन्दरलालकी लड़की बड़ी अच्छी है । कन्यापाठशालामें तीन चार श्रेणियोंतक पढ़ी हुई भी है ।"

दूसराः–"हाँ साहिब लड़की तो बड़ी ही होशियार मालूम होती है, पाठशालासे भी उसे इनाम मिला है । बोल चालमें भी अच्छी है । मुझे सुन्दरलालके यहाँ आने जानेका काम पड़ता है तब मैं अक्सर उसे देखा करता हूँ ।"

तीसराः–"उम्रमें भी खासा तेरह चौदह वर्षकी है ।"

एकवृद्धः–"अरे भाइयो ! मगर वह गरीबकी लड़की है मनोहरलाल उसे कब पसन्द करेगा ?"

एकः—"गरीब नहीं तो उसे अमीर कौन व्याह देगा ? जवानी तो ढल चुकी है उम्र भी पचास पचपन बरसके लगभग हो गई है ।"

दूसरा:—"अजी वह भी कमसे कम दो तीन हजार लिए बिना मुफ्तमें थोड़ा ही ब्याह देगा ?।"

तीसरा:—"ओह! दो तीन हज़ार क्या पाँच हज़ार लेगा तो भी देंगे और मनोहरलालका ब्याह करावेंगे।"

वृद्ध:—"तब वह सामने सुन्दरलाल बैठा है उसे बुला लो बात चीत करलें।"

एक:—"मगर मनोहरलालसे पूछे बिना तुम अपने आप ही बात चीत कैसे करलोगे ?"

तीसरा:—"मनोहरलालसे पूछ रक्खा है, उसे क्या पूछेंगे ? मित्रताके नातेसे क्या वह हमारी तय की हुई बात नहीं मानेगा ? आखिर उसे ब्याह तो करना ही है। तब सुन्दरलालकी लड़की-से ही कर लेगा।"

वृद्ध:—"खैर वैसे बात तो कर लेना चाहिए। अभी उसे वचन नहीं देंगे। उसकी इच्छा तो देख लें।

एक:—"हाँ यह ठीक है।"

उनमेंसे एक उठकर गया, और दूसरी मंडलीमें बैठे हुए सुन्दर-लालको बुला लाया।

एक:—"कहिए सुन्दरलालजी आजकल धन्दा रोज़गार कैसा चल रहा है ?"

सुदन्रलाल:—"आजकल तो काम मन्दा है खानेयोग्य पैदा भी कठिनतासे होता है।"

वृद्धः—"अजी पूँजीके विना व्यापार भी क्या चले ? सौ दो सौकी पूँजीसे कोई कितना कमा ले ?"

दूसराः—"हाँ साहिब पूँजीकी बात तो ठीक है, पर आजकल कुछ धोखाबाजी भी चाहिए जमाना बदल गया है। विना सफाईकी लच्छेदार बातें किये काम नहीं चल सकता, और ये बेचारे धोखा-बाजी कुछ नहीं जानते। ये तो पुराने जमानेके धर्मात्मा आदमी हैं। और इस जमानेमें धर्मात्मा भले आदमी तो दुःख ही उठाते हैं।"

एकः—"अजी इस जमानेमें धर्म पालना बड़ा ही मुश्किल है। लबाड़ीपन तो हरएक सीख लेता है।"

दूसराः—"मगर सुन्दरलालजी, क्या कहना साहिब ! पूरे धर्मात्मा हैं बड़े सवेरे उठते हैं। हाथ मुँह धोकर मन्दिर जाते हैं वहाँ गरम पानीसे स्नान करके पूजा प्रक्षालनमें लगते हैं। बड़ी ही भक्तिके साथ भगवान्की आठ बजे तक पूजा करते रहते हैं।"

वृद्धः—"अजी इनके धर्मात्मा होनेमें तो कुछ सन्देह ही नहीं है। हाँ सुन्दरलालजी अब सुनहरीका विवाह कहाँ और कब करना निश्चय किया है ? क्योंकि लड़की ब्याहने योग्य हो गई है।"

सुन्दर०—"क्या बताऊँ साहिब, हमारी जातिके सब अच्छे घरानेवाले धनी आदमी तो धनवानोंके घर व्याह करते हैं। और सुसरालसे हजार पाँचसौ रुपये लेनेकी इच्छा रखते हैं। मैं गरीब आदमी, मेरे पास देनेको कहाँ ? इतना भी तो नहीं कि मैं लड़कीक व्याहमें व्यवहार योग्य खर्चा कर सकूँ।"

वृद्ध:—"आप जानते हैं कि मनोहरलालकी स्त्री मर गई है। क्या इनके साथ सुनहरीका ब्याह कर देंगे तो कुछ हर्ज है ?"

एक:—"घर वर दोनों ही अच्छे हैं।"

दूसरा:—"मगर इनके पास इतना रुपया कहाँ है ? जो ये बिरादरीके नुकते साधलें और लड़कीका ब्याह करदें !"

तीसरा:—"ये मनोहरलालसे खर्चे लायक रुपया ले लें तो इसमें क्या कुछ हानि है ?"

वृद्ध:—"यह तो अच्छी बात है, इसमें तो इनकी कोई हानि नहीं है। यदि ये अपने घरमें रखते हों तो इन्हें दोष है। कहिए सुन्दरलालजी ठीक है न ?"

सुन्दरलालने केवल अपना सिर हिला दिया। मगर उसका सिर हिलाना बताता था कि वह इस कामसे पूर्णतया सहमत नहीं है।

दूसरा:—"अजी साहिब, असलमें बात यह है, कि इनके पीछे कई झगडे हैं। इनके और तीन लड़के हैं जो अतरोलीमें रहते हैं। उनमेंसे एक कँवारा है। ये चाहते हैं कि कहीं कोई ऐसा घर मिल जाय जो आँटासाँटा करले यानी वह अपनी बहिनको इनके लड़केके साथ ब्याह दे और ये उसको अपनी लड़की ब्याह दें।"

तीसरा—ऐसा कैसे हो सकता है ? ये रुपये लेलें और अपनी लड़की को ब्याह दें। उन्हीं रुपयोंसे फिर ये अपने लड़केका भी ब्याह करलें।"

वृद्ध:—"बात तो ठीक है। कहिए सुन्दरलालजी क्या मन्शा है ?

सुन्दरलाल:—"मैं सोचकर उत्तर दूँगा।"

और भी सैकड़ों तरहकी बातें होती रहीं। अन्तमें कपाल

क्रियाका समय आया। मनोहरलालने एक बाँस लेकर ज़ोरसे खोपरीमें मारा खोपरीसे फटाकेकी आवाज़ आई। मानो वह मनोहरलालसे कहती थी निर्दय यह क्या करता है? कलतू जिस मस्तकको चूमकर अपनेको कृतकृत्य मानता था उसीको आज तू इस निर्दयतासे टुकड़े कर रहा है। जिसको कल तूनें अपने हृदयके खूनका पानी बना, नेत्रकी झारीमें भर कर प्रेम पूर्वक स्नान करवाया था, पर उसी पर तू आज इतना जुल्म कर रहा है। हाय निर्दय! क्या इसी लिए तू मुझे कहता था कि मैं तुझे छोड़कर और किसीसे प्रेम नहीं करूँगा विवाह नहीं करूँगा? कपालकी यह आवाज़ सुन मनोहरलालका कलेजा काँप गया। उसने बाँस अलग फैंक कर ज़ोरसे दहाड़ मारी; उसने इस दहाड़के द्वारा उत्तर दिया कि मैंने विवश जातिका व्यवहार रखनेके लिए यह काम किया है। प्यारी! मुझे क्षमा कर जो कुछ मैंने तुझसे कहा है उसको सदा निबाहूँगा। इस हृदय द्रावक दहाड़को सुनकर सबको दुःख हुआ। फिर मनोहरलालने खोपड़ीमें, बाँसपर बँधे हुए कुल्ड़े से घृत डाल, एक लकड़ीका टुकड़ा उठाकर चितामें फैंक दिया, पीछेसे दूसरोंने भी एक २ लकड़ीका टुकड़ा चितामें डाला और सब अपने २ घर चले गये। +

+ दाह क्रियामें जब थोड़ासा माँस बच जाता है तब मरनेवालेका जो बहुतही निकटवर्ती होता है वह मुर्देकी खोपड़ी फोड़ता है। फिर रोता है और उस खोपड़ीमें घी डालता है। लोग इसे कपाल क्रिया कहते हैं। वह चितामें एक लकड़ी डालता है, पीछेसे अन्य लोग भी एक एक लकड़ी डालते है। यह हिन्दुओंमें रिवाज है।

पंचम परिच्छेद

कीजिए दुनिया परस्ती याँ भला
ऐ अजल किस जिन्दगीके वास्ते ।
अपना तो यह खयाल है सच पूछिए अगर
किस कामका वो दिल जो नहो अख्तियारमें

दिन पर दिन और रात पर रात गुजरने लगे। इसी तरह धीरे धीरे तीन चार मास व्यतीत हो गये। मनोहरलालको उसके मित्रोंने, और संबन्धियोंने कई बार कहा कि वह ब्याह कर ले। मगर उसने एककी न मानी। वह कहने लगा:—"मैं तो अब त्यागी बन जाऊँगा। मुझे अब घर धन्धे अच्छे नहीं लगते।" हस्तिनापुरमें एकवार मेले पर गया तब भी उसने एक ऐसे ही पुरुषसे जिसने मानके वश—भाईयोंकी बात सहन न कर सकनेके सबब घर छोड़ दिया था और थोड़ा बहुत समाजका काम कर, मुफ्तमें मजेसे पेट भरता था, कहा:—"महाशय, मुझे भी आप अपने समान बना लीजिए मैं सदा ब्रह्मचारी रहूँगा।" उसने उत्तर दिया:—"क्या आपमें घर छोड़नेकी शक्ति है? क्रोध वश या दुःख वश भी घर छोड़ देना कुछ खेल नहीं है।" मनोहरलालने दबी आवाजमें उत्तर दिया:—"हाँ" इतनेहीमें उसके साथ वालेने इधर उधरकी बातेंकी और वे दोनों वहाँसे चल दिये।

मन बड़ा ही चंचल होता है। वह सदा एक जगह स्थिर नहीं रहता। यदि आदमीका चित्त एक बात पर लगा रह जाय तो वह कुंदनकी तरह चमकने लग जाय; मगर अक्सर ऐसा नहीं होता। जैसी जैसी परिस्थितियाँ होती हैं वैसाही वैसा चित्त भी हो जाता है। मनोहरलाल आखिर मनुष्य था। वह मानवी प्रकृतियोंको वशमें नहीं कर सका। लगभग एक बरसके बाद मनोहरलालका दिल फिरा। उसने अब व्याह करना चाहा मगर अपने सगे संबंधियोंको कहते लज्जा आती थी। इस लिए उसने स्वयं ही किसी लड़कीको खोजनेकी ठानी वह साथमें पानीपतके एक व्यक्तिको लेकर लड़कीकी तलाशमें रवाना होगया।

वे लड़कीकी खोज करते २ एक छोटेसे ग्राममें जहाँ केवल सौ सवा सौ घरोंकी बस्ती थी, भूखे प्यासे दुपहरके समय घड़ीमें जब कि बारा बजे होंगे पूछते हुए केवलरामकी दूकान पर पहुँचे। मनोहरलालके साथ वाला पानीपती बड़ा चालाक आदमी था। उसने मीठे शब्दोंमें जाकर जय जिनेन्द्र किया और दूकानके पासकी सायामें अपनी गठड़ी रखदी। केवलरामने पूछाः—"क्यों साथमें कुछ लाये भी हो या नहीं?" हम नहीं कह सकते कि उसने ऐसा प्रश्न क्यों किया? शायद पानीपतीसे पहिले इस विषयमें उसकी बात हुई होगी या वह जानता होगा कि पानीपती दलालीका काम करता है। कुछ भी हो उसने पहिले ही उक्त प्रश्न किया। पानीपतीने जबाब दियाः—" सब कुछ लाये हैं। पहिले हमें माल तो दिखाओ।" केवलरामने अपना पंजा दिखाकर

कहा:—" यदि इतने हों तो माल बतादेंगे।" पानीपतीने उत्तर दिया:—" जो कुछ आप कहेंगे वही होगा मगर एकवार माल तो देखलें। केवलरामको कुछ समाधान हुआ। उसने आवाज दी: " गोपी, जरा पानी लाना" थोडी देर बाद एक लड़की पानीका लोटाभर लाई। उसकी आयु लगभग सोलह सत्रह बरसके होगी। रंग सावरा, चेचक रूह, गोल चहरा, लम्बी नाक, मझली आँखें। मतलब यह है, कि लड़की न ज्यादा रूपवती थी न कुरूपा ही थी। गोपी पानी पिलाकर चलीगई। बेचारे मनोहरलालने पानी पीकर चित्त शान्त किया। फिर धीरेसे पानीपतीको पूछा कहो क्याबात है ?" उसने उत्तर दिया:—" पाँच हजार माँगता हैं।" मनोहरलालने कहा:—" तीन हजारके लिए कहो।" पानीपतीने अपनी तीन उँगलियाँ उठाकर कहा:— "क्या इतनेमें नहीं बनेगा ?।" पानीपतीकी बात सुनकर केवलरामका चहरा लाल हो गया, और भ्रकुटी चढ़ाकर बोला:—"इतने में कहीं ढेड़ चमारके यहाँसे ले आना। बनियेकी चीज इतनेमें नहीं मिलेगी। जाओ अपने बिस्तरे उठाओ।" पानीपती कुछ और कहना चाहता था मगर केवलरामने सुनना पसन्द नहीं किया। आखिर बेचारोंको वहाँसे उठकर भूखे प्यासे ही रवाना होना पड़ा। यदि मनोहरलाल पहिले ही अपने मित्रोंकी बात मान सुन्दरलालकी लड़कीसे व्याह कर लेता तो आज उसे वृथा क्यों ऐसा कष्ट उठाना पड़ता ? सच है जो पहिले मन स्थिर करके काम नहीं करता है उसे पीछे अवश्य पछताना पड़ता है।

ये वहाँसे रवाना होकर फिरते २ अतरौली जिला गाजियाबादमें आये। वहाँ एक गृहस्थके घरमें जाकर ठहरे। इस घरमें तीन पुरुष और चार स्त्रियाँ थीं। पुरुष तीनों भाई थे स्त्रियोंमें एक उनकी कँवारी बहिन थी। दो दोनों बड़े भाइयोंकी स्त्रियाँ थीं और एक उनकी माँ थी। छोटा भाई अभी तक कँवारा ही था। वहाँ लड़कीके साथ व्याहकी बात चीत हुई, उन्होंने नकद रुपये न लेकर अपने भाईकी शादी करवा देनेके लिए कहा। अन्तमें यह निश्चय हुआ, कि मनोहरलाल कहीं लड़कीके भाईका व्याह करवा दे और अगर व्याह नहीं करवा सके तो वह साढ़े चार हजार रुपये नकद लड़कीके भाइयोंको दे दे। इस तरह व्याह निश्चित कर मनोहरलाल और पानीपती दोनों दिल्ली लौट आये।

मनोहरलालने दिल्ली आकर अतरोलीवालोंको चिट्ठी लिखी कि तुम्हारे भाईकी मैंने पानीपतमे अमुक व्यक्तिके यहाँ सगाईकी बात ठीक कर ली है। तदनुसार उन्होंने वहाँ अपना आदमी भेजा मगर पानीपतमें उस नामके आदमीका कहीं पता न चला इस लिए वे बड़े ही नाराज हुए। अस्तु !

नियत दिनको केवल २० आदमियोंके साथ मनोहरलाल अतरोली व्याहने गये। लड़कीके भाई बड़े ही नाराज हुए। उन्होंने व्याह करनेसे इन्कारकर बीसियों गालियाँ सुनाईं, क्योंकि मनोहरलालने उनके छोटे भाईकी पानीपतमें सगाई कर देनेका झूठा धोखा दिया था और फिर शर्तके अनुसार साढ़े चार हजार रुपये भी नहीं ले गया था। मनोहरलालने समझा था कि मेरी धोखाबाजी चल जायगी मगर

उसका विचार व्यर्थ हुआ और उक्त तरह उसे बे इज्जत होना पड़ा। मनोहरलालके संबन्धी एक भाई विमलचन्द्रने अतरोली वालोंको बहुत कुछ समझाया और कहा:—"तुम डेढ़ हजारके एवजमें हमारा तीन हजारका जेवर रखलो। जब हम रुपये दे दें तब तुम हमें जेवर वापिस दे देना।" मगर अफसोस। उन्होंने इनकी बातका विश्वास नहीं किया। उन्होंने समझ लिया कि ये सब धोखेबाज़ हैं। जेवर गिलटका होगा। सच है धोखेबाजोंकी संगतिसे अच्छे आदमी भी इसी तरह बेइज्जत हुआ करते हैं। अन्तमें विमल-चन्द्र रातको बारा बजे दिल्ली पहुँचे और वहाँसे रातके तीन बजे शेष डेढ़ हजार रुपये लेकर वापिस आये। जब लड़कीवालोंने सौदेके पूरे रुपये लेकर घरमें रक्खे तब उन्होंने सौदेकी चीज़ मनोहरलालको सौंप दी, यानी अपनी बहिन—बकरीको बूढ़े ऊँट मनोहरलालके गलेमें बाँध दी।

पाठको! देखा! कैसी निर्दयता! कैसी बेशर्मी! कैसी धोखेबाजी! अफसोस! हिन्दुओ, तुम्हारे यहाँ इस तरहके कार्य होते रहें और तुम टससे मस भी न हो। जैनियो! यह तो तुम्हारी ही जातिके सपूतका करतूत है। क्या तुम कुछ ध्यान नहीं दोगे? क्या समाजसे कन्या-विक्रयका मुँह काला न करोगे? माताओ, यह तुम्हारा काम है। कल क्या होगा यह बात कोई नहीं बता सकता। तुम भी सन्तानवाली हो। दैव न करे कि ऐसा हो, सोचो कि कल तुम मरगई तो क्या तुम्हारी कन्याएँ भी इसी तरह नहीं बिकेंगी! अवश्य बिकेंगीं। तब अभीसे तुम इसका प्रयत्न क्यों नहीं करती हो? क्यों नहीं इस कन्या विक्रयकी नीच प्रथाको

जड़से उखाड़ देती हो ? क्यों पैसे के लालचसे बिचारी बालिका-ओंको वृद्ध कूपमें ढकेलती हो ? तुम सब्जीका—हरीका—सचितवस्तुका जमीकन्दका त्याग करती हो क्या तुमसे एक त्याग ज्यादा नहीं किया जायगा ? क्या यह एक नियम नहीं लिया जायगा कि:—हम न कभी पैसा देकर लड़की लाएँगे और न कभी पैसा लेकर लड़की देंगे ! होगा क्यों नहीं ? अवश्य होगा। तब आज ही या कल प्रातःकाल ही दर्शन करने जाओ तब भगवान्की प्रतिमाके सामने, या स्थानकमें जाओ तब साधुजी महाराजकी साक्षीसे यह नियम लेलो। फिर देखो कि तुम्हारी जातिकी, तुम्हारे धर्मकी और तुम्हारे देशकी कितनी शीघ्र उन्नति होती है।

पाठक पाठिकाओ, क्षमा करना। तुम भी समझते होगे कि सुना-रहा था मनोहरलालका हाल और बीच हीमें यह कैसा पचड़ा छेड़ दिया। मगर क्या करूँ ? हृदयके वेगको नहीं रोक सका अस्तु।

दूसरे दिन मनोहरलाल क्रय कृत—खरीदी हुई नई दुलहिनको ले कर दिल्ली आये। जातिकी रीतियाँ पूरी की गईं। फिर हमारी यह वृद्ध युवतीकी अलौकिक जोड़ी रम्मत गम्मतमें—चहल पहलमें—ऐशो इशरतमें अपने दिन बिताने लगी। चलो हम भी थोड़ा आराम लेलें।

पाठक समझ गये होंगे कि यह सुन्दरलालकी ही लड़की है। जिसका हाल तीसरे परिच्छेदमें आ चुका है। वह सात आठ महीने पहले मर गया था, इसी लिए यह लड़की अतरोली अपने भाइयोंके पास चली गई थी।

छठा परिच्छेद

संगत ही गुण ऊपजे, संगत ही गुण जाय ।
मार्जारीको परसराम, चारों वेद पढ़ाय ॥



छोटे दरीबेमें सेठ हुकमचंद्र एक अच्छे साहूकार मनुष्य हैं । इनके घरपर सब तरहसे परमात्माकी कृपा है । इनके पास धन है, दौलत है, दास दासियाँ हैं, आज्ञापालक दुर्गादेई नामकी अर्द्धाङ्गिनी है, और सुशील विनयी गोपाल नामक लड़का है, जो आजकाल अलाहबाद थर्ड ईयर Third year यानी फर्स्ट बी. ए. में पढ़ता है ।

दुर्गादेई और मनोहरलालकी पहिले वाली स्त्री गोमती दोनों सहेलियाँ थीं । दोनोंमें परस्पर बहुत ही प्रगाढ़ प्रेम था । घण्टे दो घण्टे दोनों नित्य प्रति जब तक साथ नहीं रहती थी तब तक उन्हें कभी चैन नहीं पड़ता था । गोमतीके उत्तम स्वभावसे पाठक परिचित हो चुके हैं । अब दुर्गादेईका भी स्वभाव सुनिए ।

दुर्गादेईका स्वभाव पहिले बहुत ही कठोर था । यह सदा हरएकसे लड़ती रहती थी । पतिको जैसे चाहती थी वैसे ही धमकाती थी । वह नहीं समझती थी कि पतिके साथ कैसा वर्ताव करना चाहिए ? संसारमें दया क्या वस्तु है ? परोपकार किसे कहते हैं ? स्वार्थत्यागका क्या अर्थ है ? आत्मोन्नति कैसे होती है ? मगर प्लेगके

बाद जब इसकी गोमतीसे मुलाकात हुई तब हीसे उसका स्वभाव शनैः २ बदलने लगा । गोमतीकी परोपकारवृत्ति देखकर इसने भी कुछ भलाई करना सीखा, गोमतीका स्वार्थत्याग देखकर इसने भी दान देना सीखा और गोमतीको पतिपरायणा देखकर यह भी पतिकी आज्ञा मानने लगी ।

जाड़ेकी ऋतुमें एक दिन दुर्गादेई, चम्पा और गोमती तीनों दर्शन करके लौट रहे थे, उस समय सात आठ वर्षका एक गरीब लड़का अपने अन्धे पिताकी उँगली पकड़े हुए उन्हें दूरसे आता हुआ दिखाई दिया । लड़केके बदनपर एक फटे कुर्ते और फटीसी लंगोटीके सिवा कुछ नहीं था । वह जाड़ेसे धूज रहा था । उसके दाँत ठण्डसे कड़ २ कर रहे थे । इसे देखकर गोमतीका हृदय भर आया । वह कुछ बोलना चाहती थी इतने हीमें:—

"अरी ! माँ ! देख तो लड़केके पहिननेको कुछ नहीं है । बेचारा जाड़ेसे कैसा धूज रहा है ?" सात वर्षकी बालिका चम्पाकी मधुर करुणामिश्रित आवाज उसके कानमें पड़ी ।

"बेटी ! मैं क्या करूँ ? मनुष्य सब ही अपने २ कर्मोंका फल भोगते हैं । यदि मेरे कपड़े इसके काम आते तो मैं एक दो अपने कपड़े इसे दे देती ।........" बीचहीमें चम्पा बोल उठी:—"क्यों माँ मैं अपना पुराना कोट और पाजामा इसे दे दूँ ? मुझे बेचारे पर बड़ी दया आती है ।"

"फिर तू क्या पहिनेगी ?" दुर्गादेईने पूछा ।

"मैं जो अभी पहिने हुए हूँ वही पहिनूँगी। मेरे लालाने कल काश्मीरेका एक कोट व पाजामा बना देनेके लिए कहा है। वह बन जायगा तब फिर दो हो जाएँगे ? क्यों माँ ठीक है न ?" चम्पाने कहा।

"जैसी तेरी इच्छा, मैं कुछ नहीं जानती।" गोमतीने उत्तर दिया।

चम्पा भागकर उस लड़केके पास गई, उसे अपने घर ले गई व अपना कोट पाजामा और एक कपड़ेकी टोपी उसे देदी।

दुर्गादेई थोड़ी देर गोमतीके पास ठहरकर अपने घर चली गई। दुर्गादेईके हृदय पर चम्पाके इस सुकृत्यका गहरा असर हुआ। वह भी उस दिनसे परोपकार करनेमें—गरीबोंका दुःख दूर करनेमें बहुत भाग लेने लगी। उस हीं दिनसे दुर्गादेईने निश्चय किया कि वह चम्पाको अपनी पुत्रवधू बनायेगी और चम्पाके पवित्र हृदयसे—पवित्र पदोंसे अपने घरको पावन करेगी।

चम्पाको दुर्गादेई प्रायः अपने घर बुलाती, मिठाई खिलाती कुछ खिलौने देती, और बहुत ही प्रेम दिखाया करती थी। एक दिन उक्त घटनाके बाद दुर्गादेईने गोमतीको व चम्पाको बुलाकर भोजन करवाया और एक बढ़िया कपड़ेका जोड़ा चम्पाको दिया फिर उसने चम्पाको अपनी गोदमें बिठाई और प्रेमसे उसका मुँह चूमकर वह बोली:—"मैं तुझे अपने घरकी मालिकन बनाऊँगी। क्योंरी चम्पा, बनेगी या नहीं ?"

चम्पा नहीं समझती थी कि उसे दुर्गादेई किस हेतुसे घरकी

मालिकन बनानेके लिए कह रही है। वह तत्काल ही कह बैठीः—"हाँ! हाँ। बनूँगी क्यों नहीं?.........."

चम्पाकी बात सुनकर दुर्गादेई और गोमती दोनों खिलखिला कर हँस पड़ीं। चम्पा उनका मुँह देखती रह गई कि यह बात क्या है? "क्योंरी चम्पा तो तू गोपालकी बहू बनेगी न?" दुर्गादेई ने हँसते हँसते कहा।

यह सुनकर चम्पा शर्मा गई और दुर्गादेईकी गोदसे भाग कर एक ओर छिप गई।

सातवाँ परिच्छेद।

मुझको नाहक हलाल करते हो,
खून ये बे कुसूर होता है।
जीतेजी कद्र बशरकी नहीं होती फादर,
याद आयगी तुम्हें मेरी वफा मेरे बाद।

भादोंमासकी कृष्णचतुर्थीको पानी बड़े जोरसे बरस रहा था। आकाशमण्डल बद्दलोंसे घिर रहा था। इसी तरह पहर दिन चढ़ गया, पानीका जोर कुछ कम हुआ, अब केवल खाली मेघोंकी—निर्जल मेघोंकी गर्जना सुनाई देने लगी। बिजली बीच २ में अपनी छटा दिखा दिखा कर विलुप्त होने लगी। मनोहरलालके मकान का चौक खुला और

---

१ वृथा २ मारना ३ मौत ४ निरपराध ५ मनुष्यकी ६ पिता

कच्चा था इसलिए उसमें कीचड़ हो रहा था। सुनहरी मकानमें बैठी भोजन बना रही थी। चम्पा बैठी हुई अपने पाठशालाका कार्य कर रही थी। इतनेही मेंसुनहरीके कानोंमें आवाज आई:—" लो अमरूद जामुन" सुनहरी तत्काल ही एक बोईयेमें—छोटीसी टोकरीमें आधसेरके लगभग गेहूँ लेकर:— " ऐ अमरूदवाले ! ऐ अमरूदवाले !" पुकारती हुई दौड़कर बाहिर चली गई। अमरूदवालेने आकर अपना टोकरा उतारा, गोमतीने तराजूमें गेहूँ डाले और पूछने लगी:—" अमरूद कैसे देगा ?" " बराबर " उत्तर मिला " क्या डेढ़ भार नहीं देगा ?" " लेजा २ सेठानी अपने गेहूँ। सवेरे ही सवेरे चिकल्लस करने लगी है।" अमरूदवालेकी बात सुनकर सुनहरी चुप हो गई और उसकी तरफ देखने लगी, फिर बोली:—" अच्छा बराबर ही दे दे" अमरूदवालेने अमरूद तराजूके दूसरे पलड़ेमें रक्खे। सुनहरीने यह कहते हुए कि ये अमरूद अच्छे नहीं हैं, अमरूदके टोकरेमें हाथ डाला और अच्छे अमरूद टालनेके लिए वह सारे अमरूदोंको ऊपर नीचे करने लगी। कसाईने (अमरूद बेचनेवालेने) सुनहरीका हाथ पकड़कर झटकेसे दूर हटादिया और कहने लगा:—" क्या मेरे अमरूद तेरे............से कुछ कम हैं ?" सुनहरीनें हँसतेहुए कहा:—" घर गया कैसा बोलता है !"

छिः छिः पर्देके रक्षको ! स्त्रियोंको घरमें बैठे २ कायर और सत्वहीन बनादेनेवालो ! विद्या पढ़ाकर उत्तम शिक्षा देनेके विरोधियो ! देखा तुम्हारे घरोंमें कैसी दशा होती है ? क्षुद्र शाक तरकारी बेचनेवाले तक तुम्हारी गृहिणियोंकी इज्जत बिगाड़ देते हैं और वे उल्टा हँसती हैं। देवियो ! क्या यही तुम्हारा पातिव्रत धर्म है ? क्या यही तुम्हारी लज्जालु प्रकृति है ? नहीं

नहीं ये तो बड़ी ही घृणास्पद स्थिति है। यदि अब कभी ऐसा अवसर पड़े तो उस नालायकको इतनी सजा दो कि वह सदा याद रक्खे।

सुनहरी अमरूद लेकर दौड़ती हुई अन्दर गई। चौकमें कीचड़ होनेसे सुनहरीका पैर फिसल गया। वह धड़ामसे चारों खाने चित गिर गई। बड़ी ही चोट लगी। अमरूद सब बिखर गये। चम्पा धड़ाकेकी आवाज़ सुनकर दौड़ी हुई बाहिर आई मगर सुनहरी इसके आनेसे पहिले ही उठ कर अमरूद इकट्ठे करने लग गई थी इस लिए चम्पा सुनहरीको गिरी हुई नहीं देख सकी। हाँ वह उसकी धोतीमें कीचड़ लगा देख कर यह जरूर समझ गई थी कि सुनहरी गिर गई है। इस लिए चम्पाने पूछाः—"मौसी क्या हुआ?" सुनहरीने कड़क कर कहाः—"हुआ क्या? कुछ नहीं।"

अन्दर जाकर सुनहरी क्या देखती है, कि तवे पर रोटी जल रही है। बस सुनहरीको अपना क्रोध निकालनेका—गिरनेकी जलन निकालनेका अच्छा अवसर हाथ आया। वह तत्काल ही चीमटालेकर चम्पापर यह कहती हुई झपटीः—"घर गई को कामकी तो कुछ परवाह ही नहीं है। सारे दिन बस खेलने या पढ़नेसे काम पढ़ पढ़के न मालूम कहाँकी डिप्टी साहिब बनेगी?" और लगी तड़ाख तड़ाख चीमटे लगाने। बिचारी चम्पा हाथ जोड़ने लगी पैरों पड़ने लगी और बोलीः—"मौसी! मुझे क्या मालूम था कि तवे पर रोटी है। अन्यथा मैं अवश्य सँभालती। तुमने मुझे कहा भी तो नहीं था।" इतना सुनना था कि सुनहरीको और ज्यादा गुस्सा आया। उसने यह कहकर कि "लुच्ची कहीं की! एक

काम नहीं करना और दूसरे जीभ चलाना । तालवेसे जीभ निकाल लूँगी ।" पाँच चार चीमटे और लगाये । चूल्हेमें पानी डाला, व आप ऊपर कमरेमें जाकर लेट रही ।

बेचारी चम्पा कान दबोचकर चीमटोंकी वेदना सहती हुई, और अपने दुर्दैवको रोती हुई कोठेमें चली गई व चुपचाप क्लासका काम करने लगी ।

थोडीही देरमें मनोहरलाल आया । वह क्या देखता है, कि सुनहरी कमरेमें सोती हुई डसूके भर रही है और अबतक भोजन नहीं बना है । सुनहरीको इस तरह रोती देख मनोहरलालको बहुत दुःख हुआ । सच है अपनी युवती स्त्रीको दुखित देखकर कौन ऐसा वृद्ध पति होगा जो धैर्य धर सकेगा ? वह सुनहरीके पास जाकर बैठ गया, और पूछने लगाः— "क्या बात है ? क्यों रो रही हो ?" सुनहरीने और जोर जोरसे रोना प्रारंभ किथा । फिर मनोहरलालके बहुत विनती करनेपर बोलीः—"है क्या ? तुम अपना घर सँभालो । मैं तो अपने मायके—पीहर जाऊँगी । मुझे सौ बातें सुनकर तुम्हारे घर नहीं रहना है । मुझे अपने माता पिताओंको नहीं भँडवाना है । तुम्हारे पास बहुत धन है तो तुम अपना रक्खो मुझे क्या ? मैं तुम्हारे घरकी दासी बनने नहीं आई हूँ । मुझे तो सत्यानासी भाइयोंने ऐसेके पल्ले बाँधी है कि न खानेका सुख न पीनेका सुख न जीवनका सुख ...."

मनोहरलाल बीचहीमें बोल उठाः—"कहो तो सही बात क्या हुई ?" "होना क्या था ? तुम तो ऐसे बन रहे हो मानो तुम्हें किसी बातकी खबर ही नहीं है । बनते क्यों नहीं ? आखिर तो वह

तुम्हारी लाड़ली बेटी है। चम्पा हमेशा ही ज्यूँ आवे त्यूँ अनर्गल होकर मुझे भाँडती है। ऐसी २ बातें कहती है कि जिनको कोई दासी भी नहीं सुन सकती। मगर मैं बालक समझ कर चुपचाप सब सहती रही हूँ। पर आखिर कोई कब तक सुने और सहे? आज तो उसने हद करदी...................................."

मनोहरलालसे चम्पाकी यह धृष्टता न सही गई। उसने सुनहरीकी बातें आगे सुनना बन्द कर एकदम चम्पाको पुकारा। चम्पा बेचारी पिताकी आवाज सुनकर दौड़ी गई। मनोहरलालने तत्काल ही बैंतोसे उसकी पूजा करनी प्रारंभ की। ऊपरसे तड़ाख तड़ाख बैंतें पड़ रही हैं। नीचे हतभागिनी चम्पा पड़ी २ चिल्ला रही है, और पूछती है:—"पिताजी बताओ तो सही मेरा अपराध क्या हुआ है?" मगर सुनता कौन? सच है।

हाकिम बद इन्साफ, तो फर्याद क्या कीजे?
हाकिम है इन्साफ, पर फर्याद क्या कीजे?

मनोहरलालके समान यदि संसारमें स्वच्छंद न्यायाधीश मुंसिफ बनजाएँ—यदि एक तर्फा डिगरी देनेवाले हाकिम मिलजाँय तो फिर चाहिए ही क्या? फिर तो साहूकारोंका बोल बाला है, और बेचारे गरीबोंका मुँह काला है।

हत भागिनी चम्पा! चिल्ला! चिल्ला! भले और चिल्ला, मगर तेरी इस राज्यमें सुनाई होनेवाली नहीं है— तुझे इस स्वार्थ प्रिय-युवतीप्रिय—मनोहरलालकी कचहरीसे इन्साफ मिलनेवाला नहीं है। चम्पा! तू अपनी माताकी सिखाई बातका स्मरण कर।

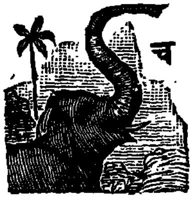
यह भी गुजर जायगी। अभी चुपचाप सब कुछ सहले। तेरा रक्षक ही जब तुझे खाने बैठा है तब तू किससे रक्षाकी आशा रखती है। गनीमत समझ कि इतना पिटकरके भी तुझे पेट भर रोटी तो मिल जाती है। मगर भारतमें कई करोड़ ऐसे तेरे दुःखी भाई बहिन हैं जिन्हें बूटोंकी ठोकरें खाने, बैंतोंसे पिटने और गालियोंकी बोछार सहने पर भी रोटी नहीं मिलती है। आये तीसरे दिन जिन्हें उपवास करना पड़ता है। उनका विचार कर और धैर्य पकड़। तेरे भी भले दिन आयँगे।

चम्पा रोती हुई सुनहरीके चरणोंमें जा गिरी और कहने लगीः-"मौसी बचा! बचा!" सुनहरीको दया आई। उसने मनोहरलालका हाथ पकड़ लिया, और कहने लगीः-"बस अब क्षमा करो। आगे से कुछ न करेगी।" सुनहरीका क्रोध उतर गया मगर मनोहरलाल, नहीं २ उस नर पिशाचका क्रोध शान्त नहीं हुआ। उसके हृदयमें अपनी युवती-प्रियाके अपमानकी जो आग लगी हुई थी वह नहीं बुझी। उसने दो चार और ऊपरसे जमा ही दी। आखिर सुनहरी बीचमें आगई और चम्पाका पिटना बन्द हुआ।

पाठक पाठिकाओ! आपको याद होगा कि पहिले परिच्छेदमें हमने चम्पाके शरीरकी दुर्दशा देखी थी। मगर उस समय उसका कारण विदित नहीं हुआ था। अब इस परिच्छेदको पढ़कर आप समझ गये होंगे कि चम्पाकी वैसी खराब हालत क्यों हुई थी?

आठवाँ परिच्छेद.

जिसका जी चाहे बुराईसे मेरा दिल तोड़े,
मैं तो दम तोड़ चुकी अब मुझे शिकवा[1] क्या है ?
बद[2] न सोचे ज़ेरे[3] गरदूँ, गर कोई मेरी सुने,
है ये गुम्बज[4]की सदा[5], जैसी कहे वैसी सुने ।



चम्पाके पिटनेकी बात धीरे २ सारे महल्लेमें फैल गई । चम्पा क्यों पिटी थी इसका कारण भी लोगोंको मनोहरलालके मकानहीमें रहनेवाली धन्नाकी माताके द्वारा मालूम होगया । सारे दरीबेके लोग इस घटनासे बहुत ही दुखी हुए । मनोहरलालसे क्या स्त्रियाँ क्या पुरुष सब ही घृणा करने लगे । घर घरमें यही चरचा होने लगी । जहाँ कहीं पाँच चार स्त्रियाँ इकट्ठी होती थीं वहीं वे एक वार मनोहरलाल और सुनहरीकी समालोचना किये बिना नहीं रहती थीं ।

उस दिन चतुर्दशीका कई स्त्रियोंके व्रत था । आठ दस स्त्रियाँ मन्दिरमें धर्म ध्यान करने आई हुई थी । नाना भाँतिकी बातें करते हुए एकने कहाः—

" क्यों दीदी, तुमने कोई नवीन बात भी सुनी है ? "

" ना बहिन मैंने तो सिवा इसके कि मनोहरलालने चम्पाको पीटी है और कोई नवीन बात नहीं सुनी। " दूसरीने उत्तर दिया ।

१ शिकायत । २ बुरा । ३ आकाशके नीचे । ४ घूमटी-पोल । ५ आवाज ।

तीसरीने बड़ी उत्सुकतासे पूछा " हाँ ! हाँ ! सखी, कह क्या नवीन समाचार हैं ? "

"क्या सुनहरीके ही नवीन समाचार हैं या किसी और के ?" चौथीने पूछा।

पहिली बोली:–" हाँ ! हाँ ! सुनहरीके ही हैं। आजकल सिवा सुनहरीके और कौन ऐसी है जो कोई नवीन बात कर सके ? शिथिलेन्द्रिय वृद्ध पतिकी स्वच्छंद रमणीके सिवा क्या अन्यको कुछ करनेका साहस हो सकता है ? देखो न बूढेकी कहाँ मत फिर गई.................." दूसरी बीचहीमें बोल उठी:–" बहिन, यह व्याख्यान तो रहने दे। बात क्या है सो बता। "

पहिली बोली:–" कई दिनोंसे सुनहरीका भाई नाहरसिंह यहाँ आया है। यहीं उसने सर्राफेकी दूकान करली है। सुनहरीने भी हजार आठसौ रुपये अपने भाईको दे रक्खे हैं। इसी पूँजीसे उसका धंदा खासा चल रहा है। बेचारा एक दो रुपये रोज पैदा लेता है। उस हीके साथ (कानोंपर हाथ रखकर) सची झूठीकी तो राम जाने मगर सुना है, कि सुनहरी उसके साथ खाती पीती है। "

" राम राम यह क्या अन्याय ! " दूसरी बोली ! तीसरीने कहा:–" कहीं ऐसा भी हो सकता है ? कि भाईके साथ ही ऐसा नीच कृत्य हो ? "

"बहिन, एक दिन मैं भी किलेके पास वाले मन्दिरमें दर्शन करने जा रही थी। रास्तेमें नाहरसिंहकी दूकानके बाहिर एक लड़का बैठा

कुछ बकने लगा रहा था। नाहरसिंहने उसे उठ जानेको कहा तो वह बोलाः—" कहता क्या है। हम तो अपनी दूकानपर जा बैठेंगे मगर तेरे जैसे तो नहीं हैं, कि अपनी बहिनके मालसे ही चार पैसे वाले बने और उसीके साथ बुरा बर्ताव करें ? यदि सर्वथा झूठ होती तो नाहरसिंह चुपचाप बैठा हुआ क्यों सुन लेता।" चौथीने कहा।

अभी तक एक प्रौढ़ा स्त्री जो चुपचाप बैठी हुई थी, बोल उठीः— " अरी, क्या यह बात झूठ हो सकती है ? इसी लिए तो सुनहरी बिचारी चम्पाको दुःख दिया करती है। उसे घरमें विशेष देर नहीं टिकने देती। चम्पाका हर समय उसे डर रहता है, कि कहीं वह उसकी सब पोल न खोल दे। मैंने तो यहाँ तक सुना है कि, वह चम्पाको किसी तरह मार देना या घरसे निकाल देना चाहती है। भगवान न करें ऐसा कि कहीं बेचारी चम्पाको सुनहरी सचमुच ही मारदे। लड़की कैसी भोली है ? और कैसे अच्छे स्वभाव वाली है ?" सबने इसकी हाँमें हाँ मिला कर कहाः—"वास्तवमें लड़की बड़ी ही सुशील और नम्र है। हो क्यों नहीं ? है तो गोमतीके तुल्य धर्मिणी और परोपकारिणीकी पुत्री ?" मगर देखो न बाई ! आजकलके आदमी कैसे हैं ? उन्हें न भगवानका डर है न धर्म कर्मका विचार है और पाप पुण्यका तो किसीको खयाल ही नहीं है। हो भी कैसे सकता है ? आखिर है तो पंचम काल ! "

देखा पाठक ! चतुर्दशीके व्रतका फल मिलनेकी—हृदयको शुद्ध बनानेकी मन्दिरमें आकर कैसी अच्छी भावनाएँ भाई जा रही हैं ?

अगर बेचारियाँ ये पढ़ी लिखी होती, यदि ये ज्ञानके द्वारा कुछ अपने मनको वशमें करना जानती होती, यदि ये व्रतका—धर्मका रहस्य समझती होती तो क्या कभी संभव था कि ये इस भाँति व्यर्थ ही दूसरोंके घरकी चरचामें अपना समय बिताती ? क्या इसके दोषकी ये ही हिस्सेदार हैं ? नहीं। इनके माता पिता इनके सास श्वसुर और इनके पति भी हैं।

इनकी बातें हो रही थीं इतनेहीमें वहाँ चम्पा भी आ गई।

एकने पूछाः—" क्यों चम्पा कैसा हाल है ? आजकल तो घरमें कुछ झगड़ा नहीं होता न ? "

" नहीं कुछ नहीं। पहिले कौनसा झगड़ा होता था ? " चम्पा ने नम्रतासे उत्तर दिया।

" क्या अभीसे बैंतों और चीमटों वाली बात भूल गई ? " दूसरीनें कहा।

" इसमें क्या है ? मेरी भूल हुई थी और उन्होंने मुझे दण्ड दिया था। क्या तुम अपने बच्चोंको यदि वे कोई भूल करें तो दण्ड नहीं देती हो ?" चम्पाने उत्तर दिया।

तीसरीने हँसते हुए पूछाः—" क्यों चम्पा, आजकल तो तेरा मामा नाहरसिंह तुम्हारे घर बहुत आता है न ? हमने तो सुना है, वह जितनी वार आता है अपनी बहिनके लिए मिठाई लाता है। तुझे भी मिलती है या नहीं ? हैं री चम्पा ! दोनों भाई बहिन घण्टे घण्टे भर अकेले कमरेमें बैठे हुए क्या बातें किया करते हैं ?"

वह कुछ आगे बोलना चाहती थी, इतनेहीमें चम्पा तमककर बोली:-" तुम्हें दूसरोंके घरकी क्या पड़ी ? क्या तुम यही धर्म साधने मन्दिरमें आई हो ? क्या इस हीका नाम व्रत पालन है ? क्या तुम्हारे घर तुम्हारा भाई नहीं आता है ? क्या तुम एकान्तमें उससे बातें नहीं करती हो ? देखना फिर हमारे घरकी बात मत करना। हमारे घरकी बातें करने का तुम्हें कुछ हक नहीं है । " चम्पाकी बातें सुनकर सब चकित हो उसका मुँह ताकने लगीं । चम्पा थोड़ी देर ठहरकर फिर नम्रतासे बोली:-" माताओ ! मुझे क्षमाकरना मैंने आपको कुछ कठोर वचन कह दिये हैं; परन्तु अपना धर्म किसीकी निन्दा करना, किसीकी बुराई करना, किसीकी चुगली करना, किसीके छुपे हुए रहस्य प्रकट करना और किसी बच्चेको फुसलाकर उसके घरकी गुप्त बातें प्रकट कराना आदि कार्योंको बुरे, महा बुरे बताता है । इनसे पापका बन्ध होता है और अन्तमें नरकमें जाना पड़ता है । " चम्पा यह कहकर वहाँसे चली गई ।

" देखा कैसी लबाड़ छोरी है ! " एकने कहा ।

" अरी ! हाथ भरकी जीभ हो रही है ।" दूसरी बोली ।

" मगर देखो तो सही चार अक्षर पढ़कर पण्डितानी बनी फिरती है और हमें उपदेश देने आई है । " तीसरीने उद्गार निकाले ।

चौथी बोली:-" सुनहरीसे भी इसी तरह चबोड़ छाँटती होगी-मुखरता करती होगी, बापके सामने भी बेलगाम बोलती होगी, इसी लिए वे बेचारे इसे सुधारनेको दण्ड देते हैं । ऐसीको तो पीटना ही चाहिए । "

बस ! होचुका ! देवियो ! तुम्हारा न्याय होचुका । क्या आत्महितकी बात कहनेहीसे चम्पा बुरी होगई ? अच्छा माताओ ! अच्छा । करो परोपकार । करो निन्दा और भरो पापका भंडार । बेचारी सुनहरी मूर्खतासे अन्याय कर रही है, और उससे जो पापका बन्ध हो रहा है, तुम भी निन्दा करके उसमेंसे भाग बँटाओ और अपने उपवासको सफल करो ।

पाठक पठिकाओ ! यदि तुम्हें भी उनके भागीदार बनना हो तो इनकी ज्यादा बातें खड़े हुए दिव्य कान लगाकर सुनलो । अन्यथा जाओ, देवका स्मरण करो,और विश्राम लो । हम फिर मिलेंगे ।

नवाँ परिच्छेद ।

सुख देना दुख मेटना, ये ही रक्खो बान,
'कृष्ण' इसीसे एकदिन, आमिलि हैं भगवान् ।



आफतका मारा एक नवयुवक आठ दस रोजसे मनोहरलालके घर आकर ठहरा हुआ था। किसी मानसिक दुःखके मारे बेचारा मनोहरलालकी दूकानके ऊपरवाली बैठकमें तमाम दिन बैठा रहता था । संध्याको मनोहरलालके साथ आता था और भोजन करके मनोहरलालके नवीन बने हुए कमरेमें जा सोता था ।

अन्धेरी रात साँय साँय कर रही थी। दिल्लीमें चारों तरफ शान्ति हो रही थी। सिवा पहरुओंके, उल्लुओंके या रण्डियोंके घरोंके अन्यत्र कहीं कोई शब्द सुनाई नहीं देता था। चम्पा घरके कामोंसे निवृत्त हो, भगवान्‌का ध्यानकर कोठेमें सोगई, मगर उस दिन उसे नींद नहीं आई। चारपाई पर लेटी हुई, लिहाफसे मुँह ढाँके अपनी सौतेली माँके कृत अन्याय और अपने पिताकी रुखाई निर्दयताका विचार कर रही थी। घड़ीमें टन टन करके बारा बजे थे। उसी समय उसके कानोंमें, किसीके कराहनेकी आवाज आई। वह उठ बैठी और कोठेके किवाड़ खोल कर बाहिर आई तो विदित हुआ, कि युवक कमरेमें पड़ा हुआ कराह रहा है। चम्पाका हृदय दयासे उत्तेजित हो उठा। वह तत्काल ही ऊपर जाने लगी। मगर फिर उसे विचार आया:—"यदि मौसीको मालूम हो जायगा तो वह क्या कहेगी? मुझे पीटेगी, बदनाम करेगी और लालासे पिटावेगी।" चम्पा जीनेमें चढ़ती हुई ठहर गई। उसके हृदयमें बड़ा भारी युद्ध होने लगा। उसे एक ओरसे दया उत्तेजितकर रही थी, दूसरी ओरसे डर रोक रहा था। दया कहती थी:—"खबरदार! क्यों कायर बनती-है? जरा विचार कर। तू किस माँकी बेटी है। क्या भयसे दुःखि-योंका दुःख मिटाना छोड़ देगी? क्या भयसे अपनी आत्माकी उत्तम भावनाओंको कुचल देगी? क्या भयसे अपने श्रेष्ठ चारित्रपर कालिमा लगायगी? देख! पीछी मत हट, जा और बेचारे युव-कका कष्ट दूर कर।" भय कहता था:—"होशियार! यदि ऊपर गई तो कल सारे महल्लेमें बदनाम हो जायगी। मनोहरलाल बैंतोंसे

तेरी चमड़ी उधेड़ देगा । सुनहरी तुझे सतानेमें कुछ कसर न रक्खेगी । देख ! आगे कदम मत बढ़ा । चुपचाप जाकर कोठेमें सोजा । क्या उस युवकका कष्ट दूर करनेके एवजमें तू अपने सिर दुःखका भार उठायगी ? नहीं । सिवा मूर्खोंके ऐसा कोई नहीं करता । ”

चम्पा थोड़ी देर तक इसी झंझटमें रही । इतनेमें इसके कानमें एक आर्तनाद “ हाय ! प्रभो ! अर्हन्त देव ! रक्षा कर ! ” सुनाई दिया । उसने तत्काल ही दयाकी सहायताकी । भय पराजय हुआ । चम्पा ऊपर गई । क्या देखती है, कि युवक मुर्गे–बिस्मिलकी तरह तड़फ रहा है–कबूतरकी तरह कमरेमें चारों तरफ लोट रहा है । न उसे बिस्तरेकी खबर है, न जाड़ेका खयाल है, और न किसीके आने जानेका ही भान है । उसे भान है, तो केवल अपनी पीड़ाका । युवककी यह दशा देख कर दयासे चम्पाकी आँखोंमें पानी भर आया । वह कुछ बोलना चाहती थी इतनेमें भयने फिर रोका, उसका कलेजा धड़कने लगा और दिल वापिस हटने लगा । मगर दयाके सामने भयकी एक न चली । चम्पा अपनी शक्ति एकत्रित करके बोली:–“ भाई साहिब ! ....” इतना बोलकर चम्पा चुप हो रही और उत्तरकी प्रतीक्षामें दर्वाजेपर खड़ी रही मगर कुछ उत्तर नहीं मिला । उसने फिर आवाज दी:–“ भाई साहिब ! भाई साहिब ! ” युवकने चम्पाकी तरफ़ देखा । क्या देखता है, कि एक दुबले पतले शरीरकी बालिका, फटासा चद्दरा ओढ़े कमरेके दर्वाजेपर खड़ी हुई धूज रही है । रोशनी उसके मुँहपर पड़कर आँखोंको चौंधियानेवाली कान्ति

पैदा कर रही है। युवक सोचने लगा:—" क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ या सचमुच ही कोई बालिका मेरे सामने खड़ी हुई मुझे पुकार रही है। मगर यह तो भाई! भाई! कहकर बुला रही है। हाय! मुझ अभागेकी बहिन यहाँ कहाँ? नहीं नहीं सारे भारतकी बालिकाएँ मेरी बहिने ही तो हैं। मगर हाँ यह तो स्वप्न ही है; क्योंकि इस समय यहाँ मेरे पास कौन आ सकता है? और ...." इतनेमें फिर आवाज आई:—" भाई साहिब, कहिए आपको क्या कष्ट है? आप टकटकी लगाकर क्यों देख रहे हैं?"

युवकको कुछ खयाल हुआ। उसे मालूम हुआ कि स्वप्न नहीं है वास्तवमें कोई खड़ा है। वह बोला:—" बहिन! अभी तुम क्यों आई?" बहिन शब्द सुनकर उसका हृदय भगिनी-प्रेमसे और उत्तेजित हो उठा। अहा! भाई, बहिन शब्दोंमें कितना माधुर्य है! कैसाही क्रूरसे क्रूर पुरुष क्यों न हो और कैसी ही कर्कशासे कर्कशा स्त्री क्यों न हो इन शब्दोंके सुनते ही एकवार उसके हृदयमें प्रेम उत्पन्न हुए विना नहीं रहेगा। फिर चम्पा! जिसका हृदय पहिले ही मानवप्रेमसे पूर था 'बहिन' शब्दसे क्यों न प्रसन्न होती। वह कमरेमें निर्भय युवकके पास चली गई और बोली:—" भाई! बताओ तुम्हें ऐसी किसकी पीड़ा है, सो तुम इतने घबरा रहे हो?" युवकने अपनी पेट-पीड़ाका हाल कहा और कहा कि मुझे दो रोजसे दस्त नहीं होता है इस लिए यह दर्द हो रहा है। चम्पाने पाठशालामें पढ़ा था कि सारे रोग पेटमें अशुद्ध परमाणुओंके एकत्रित होनेसे होते हैं। यदि किसीको दस्त न हुआ हो और रात्रिको ऐसे समयमें जब कि

ओषधिका मिलना असंभव हो, तो तेल गरम करके उसे पेट पर मलने और रूई लेकर उससे तपानेसे दस्त हो जाता है । अतः वह तत्काल ही नीचे गई, अँगीठी जला तेल और रूई लेकर, ऊपर आई । लगभग एक घंटे तक उसके तेल मलके तपाती रही । अन्तमें युवकको दस्त आया, उसका पेट कुछ हलका हुआ और दर्द भी शमन हुआ । युवक उसको आशिसें देने लगा और सच्चे हृदयसे उसे अपनी बहिन मानने लगा ।

पाठक पाठिकाओ, देखा? यह है मनुष्य प्रेम, यह है सच्ची दया और यह है वास्तविक आचरणीय जैन धर्म—दया धर्म–हिन्दू धर्म। क्या तुमने भी कभी ऐसे समयमें दुखी पड़े हुए किसी व्यक्तिकी रक्षाकी है? यदि नहीं की है तो इस बालिकाकी कृति देखकर—पढ़कर एकवार लज्जासे सिर झुकाओ, अपने मनको धिक्कारो, अपनी स्वार्थी इन्द्रिय लम्पटताको तिरस्कार करो और आजसे चम्पाका अनुकरण करनेकी प्रतिज्ञा करो ।

दसवाँ परिच्छेद



जमनाके किनारे हजारों मनुष्योंकी भीड़ लगी हुई थी । जमना नदी बड़े वेगसे बह रही थी । उसके 'खल' 'खल' शब्दसे आस-पासकी भूमि सारी गूँज रही थी । कार्तिक पूर्णिमाका दिन था । स्नान पूजा करने वालोंकी ध्वनि उस समय

बहुत ही कर्ण सुखदा मालूम होती थी। 'यमुने! मातु यमुने!' आदिक शब्दोंका उच्चार कर लोग पानीमें डुबकी लगाते थे और जाड़ेसे 'सी' 'सी' करते गीले कपड़ोंसे महादेव पर जल चढ़ा अपनी भक्तिका पूर्ण परिचय दे, चले जाते थे। जैसे जैसे सूर्य बढ़ता जा रहा था वैसे ही वैसे भीड़ भी कुछ कम होती जा रही थी। घड़ीमें लगभग दस बज चुके थे। ऐसे ही समयमें, किसी-का पाँव फिसला, धमाकेकी आवाज़ हुई और जमना उस गिरने वालीको बहा ले चली।

चारों तरफ कोलाहल मच गया:—"बचाओ! बचाओ! डूबी जा रही है।" लम्बी २ मूँछों वाले, बड़े २ पहलवान, अहिंसाकी डींग हाँकने वाले, बिन मतलब पानीको भी नहीं सताने वाले, एक कीड़ीके बचानेको अपना सारा समय खो देने वाले, शोध कर खाना खानेके लिए सारा दिन बिता देनेवाले, वहाँ खड़े देखते रहे और चिल्लाते रहे मगर किसीसे यह नहीं बना कि वे इस बालिकाको निकाल लाते। सत्य है, अपने प्राण सबको प्यारे होते हैं। जब हमारे भाई अपने सुखोपभो-गके सामान इकट्ठे करनेके लिए धन उपार्जनार्थ हजारोंके गले धोखा-बाजीकी छुरीसे काट देते हैं तब कैसे सम्भव था कि ऐसे दिखाऊ धर्मात्मा अपने प्राणोंको खतरेमें डालते। मगर उस कर्मके बड़े लम्बे हाथ हैं। वह अभी चम्पाको मारना नहीं चाहता था।

भीड़ चीरता हुआ एक युवक बड़ी तेजीसे आकर कोट उतार धड़ामसे पानीमें कूद पड़ा और देखते ही देखते उस डूबने

वालीके पास जा पहुँचा व हाथका सहारा देकर उसे बचा लिया युवक बड़ी ही नाजुक स्थितिमें पड़ गया । जमनाके लहरोंके सामने पुरुषार्थ करना कुछ ऐसा वैसा काम नहीं था । एक हाथसे चम्पाको थामना और दूसरे हाथसे जमनाके तीव्र वेगको चीर किनारे आनेका प्रयत्न सफल करना बहुत ही दुःसाध्य कार्य था । हाथ मारते मारते आखिर युवक भी थक गया, और करीब था कि दोनों डूब जाँए। इतनेहीमें एक नौका उनके पास जा पहुँची और उनको बिठाकर किनारे पर ले आई ।

चम्पा बेहोश हो रही थी । उसके पेटमें पानी भर गया था, इसलिए वह औंधी लिटा दी गई । थोड़ी देरमें उसके पेटका पानी निकल गया। उसे कुछ होश आया । वह आँखें खोलकर देखने लगी । उसने गोपालको अपने सामने बैठा देखा । इससे वह शरमाके उठ बैठी और चलनेको कदम उठाने लगी मगर उसे एक चक्कर आया और करीब था कि वह गिर पड़ती, इतने हीमें गोपालने उसे थामली । वह गोपालके कंधे पर सिर रखकर खड़ी होगई । सूर्यकी किरणोंसे चम्पाके बदनमें उष्णता आई । उसके शरीरका लोहू-खून, फिरने लगा, उसमें, फिरसे जीवनशक्तिका संचार हुआ । जब उसे अच्छी तरहसे होश आया तो वह क्या देखती है कि उसके चारों तरफ सैकड़ों मनुष्य इकट्ठे हो रहे हैं और वह गोपालके कन्धे पर सिर रक्खे खड़ी है । यह बात उसे बहुत लज्जाजनक मालूम हुई । वह तत्काल ही शर्मिंदा होकर गोपालके पाससे हटगई और दूर जा बैठी । गोपाल भी वहाँसे चलता बना ।

कई जान-पहिचान वाली स्त्रियाँ इसके चारों ओर आ बैठीं और पूछने लगीं:-"बेटी ! कैसे गिर गई थी ? क्या हुआ था ? अब तो तेरा चित्त अच्छी तरहसे है न ?" इतनेहीमें एक बोली:-" बाई परमेश्वर किसीकी माँको न मारे । आज इसकी माँत जीती होती तो क्यों इसे इस तरहका कष्ट उठाना पड़ता ?" " नहीं री ! यह सुनहरी तो बड़ी ही खोटी स्त्री है । माताएँ तो बहुतसोंकी मरती हैं और सौतेली माताएँ भी आती हैं मगर इस तरहसे तो कोई अपनी सौतके बच्चोंको दुःख नहीं देता ।" दूसरी बोली । तीसरीने कहा:-"अरी बावली, बूढ़ोंकी जवान स्त्रियाँ कैसे अच्छी तरहसे रह सकती हैं ?" इतने हीमें सुनहरी भी जो जमुनाकी सैर करने आई हुई थी गुल गपाड़ा सुनकर वहाँ आ पहुँची और चम्पाको देखकर क्रोधसे कहने लगी:-"लुच्ची, हत्या देने आई थी क्या ? डूब ही गई होती तो अच्छा था । तुझे पानीसे किसने निकाल दी ? दुष्टाने मुझे लोगोंमें बदनाम कर रक्खी है कि मौसी मुझे दुःख देती है । यहाँ पानीमें डूबनेका साँग कर क्या दुनियाको यह दिखाना चाहती थी कि तू बहुत ही दुःखी है और मैं तुझे बहुत दुःख देती हूँ । हाँ हाँ यही तो बात थी ।" ऐसा कह कर सुनहरीने ओष्ट चबाते हुए चम्पाके दो लातें जमाई । बिचारी चम्पा चिल्ला उठी । औरतें जो वहाँ जमा हो रहीं थीं बीचमें आगईं और कहने लगीं:-"नहीं री नहीं, इसका पैर फिसल गया था ।" सुनहरीने उन्हें झिड़क कर कहा:-" तुम्हें दूसरोंके घरकी क्या पड़ी है ? तुम अपने रास्ते जाओ । मैं जैसी ये है और तुम हो सबको अच्छी तरहसे जानती हूँ । " औरतें सब दूर

हट गई। अपनी इज्जत सबको प्यारी होती है। कौन दूसरोंके लिए बुरी भली बातें सुने?

सुनहरीने चम्पाका हाथ पकड़कर उसे खड़ी की। मुँह पर दो तमाचे मारे और धक्का मारकर आगे की। चम्पा बेचारी चुपचाप कर्म, की व सौतेली माताकी दी हुई सजा सहन कर अपने घर चली आई।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

जो तोको काँटा बुवे, ताहि बोइ तू फूल।
तोहि फूलके फूल हैं, वाको हैं तिरसूल॥



सुनहरीकी क्रूरता और चम्पाकी सहनशीलता सारे शहरमें फैल गई। चम्पाको उसके उत्तम स्वभावके कारण हरएक प्यार करने लगा। चम्पाकी परोपकारिणी और दयालुवृत्तिने प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें स्थान पैदा कर लिया। घर घरमें, गली गलीमें और महल्ले महल्लेमें सुनहरी व मनोहरलाल पर तिरस्कार वृष्टि होने लगी। चम्पाकी एक स्वरसे सब प्रशंसा करने लगे।

ईर्ष्या! राक्षसी ईर्ष्या! तूने बड़ों २ का संहार किया। जयचन्द्रके हृदयमें घुस भारतका संहार किया, दुर्योधनके हृदयमें घुस, महाभारतका युद्ध करा क्षत्रिय वंशका नाश किया, मानसिंहके हृदयमें घुस उससे मेवाड़ाधिनायक प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप-

सिंहको कष्ट पहुँचाने और अखिल भारतसे हिन्दूधर्मका नाम मिटा देनेका प्रयत्न कराया, औरंगजेबके हृदयमें घुस उसके द्वारा उसहीके भाइयोंका नाश करवाया, पिताको कैद करवाया और हिन्दू-धर्मका संसारसे नाम उठादेनेका उसके हृदयमें बीज बोया।

पाठक! ईर्ष्या महा भयानक राक्षसी है। जिसके शरीरमें यह प्रवेश करती है। उसका सर्वनाश कर देती है। सुनहरीके हृद-यमें भी इसने पूर्णतया स्थान कर लिया। सुनहरीके लिए चम्पाकी प्रशंसा सुनना असह्य हो गया।

वह चम्पाको अपनेसे जुदा करनेके प्रपंच सोचने लगी। अन्तमें उसने चम्पाके सिरचोरी लगानेकी ठानी। धन्नाकी माँसे जो मनोहर-लालके मकानमें ही रहती थी, सलाह ली। उसने भी सुनहरीकी हाँ में हाँ मिलाई और कहा:—"तुम अपनी स्वर्णकी चूड़ी चम्पाकी पेटीमें रख दो। फिर दूसरे दिन खूब रोना चिल्लाना और पुलिसमें सूचना दिला देना। जब पुलिस आवे तब कहना कि मुझे चम्पापर और धन्नाकी माँ पर सन्देह है। पुलिस वाले हम दोनोंकी तलाशी लेंगे। उस वक्त चम्पाकी पेटीसे चूड़ी मिल जायगी और वह सज़ा पाकर कई दिनोंके लिये तुमसे दूर हो जायगी। चोर समझकर लोग भी उसकी प्रशंसा करना छोड़ देंगे।" बात समझमें आगई और सुनहरीने अवसर पाकर चूड़ी उसकी पेटीमें रखदी।

सूर्य उदय होकर शनैःशनैः अपना प्रकाश बढ़ाने लगा। घड़ीमें लगभग आठ बज गये। सुनहरी न्हा धोकर मन्दिरमें जानेकेलिए वस्त्राभूषण पहिनने लगी। जगह पर स्वर्णकी चूड़ी न देखकर चि-

लाई । " हाय ! मैं क्या करूँ मेरी तो कोई चूड़ी ले गया " और फूट फूटकर रोने लगी। मनोहरलाल दूकान पर जाने ही वाला था, वह पूछने लगाः—" क्या हुआ ? चूड़ी कैसे चली गई ? " मगर सुनहरी सिवा रोनेके कुछ उत्तर नहीं देती थी। मनोहरलालने सारा घर ढूँढ़ मारा मगर कहीं चूड़ीका पता नहीं मिला। सुनहरीके रोनेकी आवाज सुनकर अड़ोस पड़ोसके कई औरत मर्द इकट्ठे होगये । सारे यह विचार करने लगे कि चूड़ी गई तो कैसे गई ? किसीने जाकर पुलिसमें सूचना करदी । पुलिसके थानेदार जमादर और तीन चार सिपही घटना स्थलपर पर पहुँच गये । उन्होंने घरको चारों तरफसे भली भाँति देखा, कई तरहके मनोहरलालसे प्रश्न किये। मगर कुछ मतलबकी बात नहीं मिली। वे सोचने लगे न मकानका ताला टूटा है न कहीं सुरंग—पाड़ ही मालूम होता है तब चोर कैसे आया होगा ? चोर केवल एक चूड़ी ही क्यों ले गया ? और चीजें क्यों नहीं ले गया ? ऐसे अनेक विचार करके अन्तमें उन्होंने मनोहरलालके मकानकी तलाशी लेना प्रारंभ किया।

चम्पा भी अपनी मौसीके पास आकर बैठी हुई आँसू बहाने लग रही थी। पुलिसवाले जब तलाशी लेने लगे। चम्पा व सुनहरी भी उनके साथ होली। उन्होंने सारा घर ढूँढा मगर चूड़ीका कहीं पता नहीं चला। अन्तमें जब चम्पाकी पेटी देखी गई तो उसमेंसे कुछ कपड़ोंके नीचे चूड़ी निकल आई। सुनहरी तत्काल चिल्ला उठीः— " यही मेरी चूड़ी है।" बिचारी चम्पा अवाक् होकर सुनहरीका मुँह ताकने लगी। उसकी आँखोंसे आँसू गिरनेबन्द हो गये।

जमादारने पूछाः—" यह किसकी पेटी है ? " चम्पाने निर्भयतासे कहाः—" मेरी है " " यह चूड़ी तेरी पेटीमें कहाँसे आई ? "
" मैं नहीं जानती "

इतने हीमें सुनहरी बोलीः—" लुच्ची कहींकी छोटी मोटी चीजें और पैसे चुराती थी तब कुछ नहीं कहा, इस लिए अब बड़ी चोरियाँ भी करने लगी है क्यों ? बता कौनसे........को देनेकेलिए यह चूड़ी चुराई थी ?............"

चम्पाको आज इतना दुःख हुआ जितना पहिले कभी नहीं हुआ था। वह आँसू बहाती हुई दिग्मूढ़ हो सुनहरीका मुख देखने लगी। वह विचारने लगी कि यह बाहिरके लोगोंके सामने मुझे ऐसा क्यों कह रही है ?

जमादारने सुनहरीको रोककर चम्पासे पूछा " हाँ तो तुझे बिलकुल खबर नहीं है कि यह चूड़ी तेरी पेटीमें कैसे आई ? " चम्पाने रोते हुए मगर निडर होकर कहाः—" हाँ मुझे बिलकुल खबर नहीं है " थानेदारने कहाः—" अच्छा ! अब विशेष क्यों अपना समय खोते हो, चम्पाको हवालातमें ले चलो, फिर तेहक़ीकात करनेके बाद जो कुछ होगा देखा जायगा। चम्पा थानेदारकी बात सुन, फूट फूटकर रोने लगी। इतने हीमें मनोहरलालने आगे आकर कहाः— " साहिब चम्पाको ले जानेकी आवश्यकता नहीं है। मैं इसकी जमानत देता हूँ। यदि चम्पा कहीं चली जायगी तो मैं दशहजार रुपये दाखिल कराऊँगा। " पुलिसवालोंने जमानत लेली और चले गये। पुलिसको चम्पाकी मुखाकृति और बोलनेके ढंगसे यह तो

विदित होगया कि चम्पा चोर नहीं है। मगर विवश उन्हें मुक़-दमा मजिस्ट्रेटके सामने उपस्थित करना पड़ा। तीन दिनके बाद-की तारीख पेशी नियत हुई। चम्पा सुनहरी और मनोहरलाल सब कचहरीमें उपस्थित हुए।

पहिले थानेदार पुलिसका बयान लिया गया। उसने जैसा कुछ हुआ था प्रकट किया। फिर मनोहरलालका बयान लेनेके बाद सुनहरीका इजहार लिया गया।

मजिस्ट्रेट—"तुम्हें चोरी होनेका हाल कब मालूम हुआ?"

सुनहरी—"सुबह आठ बजे!"

मजिस्ट्रेट—"चूड़ी कहाँ रक्खी थी?"

सुन०—"पेटीमें"

मजि०—"ताली किसके पास थी?"

सुन०—"वहीं रक्खी हुई थी!"

मजि०—"तुम रातको कितने बजे सोई थी?

सुन०—"नौ बजे"

मजि०—"तुम्हें स्यात् बिस्तरों पर जाते ही नींद आगई होगी? क्योंकि जो मनुष्य सारे दिन काम किया करता है उसको थकनेसे जल्दी ही नींद आजाती है।"

सुन०—"हाँ विस्तरपर पड़ते ही नींद आगई थी।

मजि०—"चम्पा भी शायद नौ साढ़े नौ बजे सो गई होगी?"

सुन०—"ऊँह! वह तो रातको बारह बजेतक बैठी हुई कुछ करने लग रही थी।"

मजि०—" जब तुम नौ बजे सोगई थी तब तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि चम्पा बारा बजे तक कुछ करती रही थी ? "

सुन०—" नहीं.......ऐसा........"

सुनहरी घबरा गई उससे कुछ स्पष्ट उत्तर नहीं दिया गया। मजिस्ट्रेटने जरा तेज होकर कहाः—" हाँ यह तो मैं सब समझ गया। अब सच २ बताओ कि चम्पाकी पेटीमें चूड़ी तुमने ही रक्खी थी या नहीं ?"

सुनहरीका चहरा पीला पड़ गया वह घबराकर इधर उधर ताकने लगी और भयसे काँपने लगी। आखिर बोलीः—" मुझे पेटीमें चूड़ी रखते किसने देखी है ? " " ठीक २ अन्तमें सत्य प्रकट हो ही जाता है। तुम स्वयमेव मान रही हो कि तुम्हें किसीने चूड़ी रखते नहीं देखी थी। मगर अब साफ २ कह दो कि चूड़ी चम्पाकी पेटीमें तुम्हींने रक्खी है न ? यदि साफ नहीं कहोगी तो तुम्हें गिराईके सिपुर्द करूँगा। " मजिस्ट्रेटने जरा डाट कर कहा।

गिराईका नाम सुनते ही सुनहरीके देवता कूच कर गये। क्योंकि गिराईमें जैसी दशा होती है उसे वह खूब जानती थी। बैतोंसे चमड़ी उधेड़ दी जाती है, मारे डण्डोंके हड्डियाँ ढीली करदी जाती हैं, और थपड़ोंके मारे दाँत डगमगा दिये जाते हैं। वह हाथ जोड़कर बोलीः—" हाँ मैंने ही भूलसे चम्पाकी पेटीमें चूड़ी रख दी थी। "

सत्य प्रकट हुआ। चम्पा मुक्त हुई। मजिस्ट्रेटने कहाः—" मुझे पहिले ही मालूम हो चुका था कि यह मुक़दमा जाली है। अब सुनहरी स्वयं इस बातको क़बूल करती है कि इसहीने चम्पाकी

पेटीमें चूड़ी रक्खी थी । निष्कारण किसी निरपराधीको सज़ा दिलानेका प्रयत्न करना महा नीचता है । ऐसे मनुष्योंको अवश्य दण्ड मिलना चाहिए । चम्पा! यदि तू चाहती हो तो मैं सुनहरी पर फौजदारी मुक़दमा चलानेको तैयार हूँ।"

चम्पा मजिस्ट्रेटकी बात सुनकर घबरागई । उसकी आँखोंमें आँसु आगये । वह हाथ जोड़ कर बोली:—" मजिस्ट्रेट साहिब, क्षमा कीजिए मेरी मौसीको छोड़ दीजिए । इसने यह काम जान बूझ कर नहीं किया है । भूलसे ही चूड़ी मेरी पेटीमें रक्खी गई है । "

" अहा हा! बालिका तू धन्य है, तेरी उदारवृत्तिको धन्य है । जा, पुत्री जा, मैं तेरी मौसीको नहीं मगर तेरी शत्रुको, तेरा सर्वनाश करनेवाले दुष्टको, तुझे संसारसे उठादेनेकी इच्छा रखनेवाले तेरे दुश्मनको तेरी खातिर छोड़ता हूँ । मंगलमूर्ति बालिका, तेरा कल्याण हो ।" यह कर कर मजिस्ट्रेट चम्पाको ९ रूपये इनाम देने लगे, उसने इन्कार किया मगर अन्तमें मजिस्ट्रेटके आग्रहसे उसे इनाम लेना पड़ा ।

देखा पाठक! यह है सच्चा धर्म यह है सच्ची भूतदया, यह है सच्ची उदार वृत्ति, अपना सर्वनाश करनेवाले पर रोष नहीं दिखाना और उसको दुःखमें गिरनेसे बचालेना । ये सब सुशिक्षाके फल हैं । यदि चम्पाकी माँ उसे उत्तम आचरण करना नहीं सिखाती । यदि उसे वह पाठशालामें भेजकर उत्तम नीतिके पाठ नहीं पढ़वाती तो कभी मुमकिन नहीं था कि आज चम्पा प्रशंसनीय चम्पा बन जाती ।

माताओ ! तुमभी यदि अपनी पुत्रियोंको ऐसी ही उदार और धर्मात्मा देखना चाहती हो तो उन्हें सुशिक्षा दो और पाठशालामें भेजकर दिलाओ, और खुद भी ऐसा ही आचरण करो।

पाठक ! क्या आप सोचते हैं कि मनोहरलालने सुनहरीसे इस दुष्कृत्यके लिए कुछ कहा होगा ? नहीं, बिलकुल नहीं; जोरूका मजदूर और फिर वह भी बूढ़ा, क्या कभी अपनी युवती पत्नीके सामने बोलनेकी हिम्मत कर सकता था ? हाँ, इतना अवश्य हुआ कि उस दिनसे वह चम्पासे प्यार करने लगा और पहिले चम्पाको कष्ट दिया था उसके लिए उसने परोक्षमें पश्चात्ताप किया।

सुनहरीके जलते हृदयमें घृताहुति होगई । अपने कमरेमें जाकर सुनहरी पलंग पर पड़ तड़फड़ाने लगी । बदला लेनेकी भावना उसके हृदयमें बाँसों उछलने लगी । उसके षड्यन्त्रसे कमला फँसी तो नहीं मगर उल्टे उसका ही षड्यंत्रकर चूड़ीका चम्पाकी पेटीमें रख देना प्रकट होगया । इस बातके स्मरणने उसके हृदयमें गहरी चोट पहुँचाई । दुःखसे वह बड़बड़ाने लगीः—“ यह दुष्टा मर क्यों नहीं गई ? पानीमेंसे गोपालने इसे जीवित क्यों निकाल ली ? यह बीमारीसे क्यों अच्छी होगई ? मैं गिरगई थी उस दिन मनोहरलाल इसे पीटता था सो उसे पीटनेसे मैंने क्यों रोक दिया ? यदि नहीं रोकती तो उस दिन ही इसका खातमा हो गया होता । यह चूड़ीकी चोरीसे क्यों मुक्त हो गई ? हाय ! मैं यदि सर्वथा इन्कार ही करती तो क्या होता ? ” यह बोलते २ वह एकदमसे उठ बैठी । उस समयकी उसकी मुख मुद्रा

ऐसी उत्तेजित मालूम होती थी जैसे कि किसी सेनापतिकी युद्धमें जानेके पहिले होती है। वह बोली:—"खैर अबकी वार देखूँगी कि वह मेरी इस युक्तिसे कैसे बचती है ? मैं ...."

पाठक ! चलो अब हमसे इस दुष्टाकी कलुषित कथा नहीं कही जाती, हृदय भरा आता है, आगेका हाल फिर कभी सुनाएँगे।

चम्पासे भला यह क्यों इतना द्वेष रखती है ? क्या इसही लिए कि वह सौतकी लड़की है ? क्या इसही लिए कि महल्ले-के लोग उसको प्यार करते हैं ? क्या इसही लिए कि वह अपनी स्वतंत्र वृत्तिके अनुसार कुछ नहीं करसकती ? अच्छा।

बारहवाँ—परिच्छेद

जाको राखे साँइयाँ, मारि न सकि है कोय।
बाल न बाँको करसके, जो जग वैरी होय॥



पाठक भूले न होंगे कि सुनहरीने चम्पाको संसार से उठानेकी कोई तदबीर सोची थी और जिसे हमने अपने हृदयके दुखी होनेसे उस समय सुनाना पसंद नहीं किया था। आइये अब देखें कि सुनहरीकी वह क्या तदबीर थी और उसने किस तरहसे उसे पूरी की।

गरमीकी ऋतु होनेसे स्कूल प्रातःकालका होता था। चम्पा पढ़ने चली गई थी। सुनहरीने धन्नाकी माँसे रेटाल (चूहोंके मारनेका जहर) मँगवाकर थोड़ासा चम्पाकी पेटीमें रख-दिया और एक लड्डू बनाकर थोड़ासा उसमें मिला दिया, फिर लड्डूको बाहिर ताकमें रख दिया और आप रसोईघरका ताला बंद कर किसी पड़ोसनके पास चली गई। ताली धन्नाकी माँको दे गई और कह गई कि यदि मनोहरलाल आवें तो उन्हें दे देना और यदि चम्पा आवे तो उसे कह देना कि उसके लिए ताकमें लड्डू रक्खा हुआ है।

कौन नहीं जानता कि मनुष्यके आयु कर्मकी जब तक निकाचित स्थिति होती है तब तक उसे कोई नहीं मार सकता। यदि कोई तोपके मुँह पर रख कर उसे उड़ाना चाहेगा तो तोपका मुँह बंद हो जायगा, यदि कोई आगमें गिरावेगा तो आग पानी हो जावेगी और पानीमें डुबावेगा तो पानी उसे अपना सिरमौर बना कर रक्खेगा। इसी लिए तो कहते हैं कि "मारने वालेसे बचाने वालेके हाथ बड़े लम्बे हैं।" तदनुसार चम्पाकी भी रक्षा हुई। मगर कर्मका—प्रकृतिका यह सिद्धान्त क्या कभी अन्यथा हो सकता है कि—

"जो जैसी करणी करे, वह वैसा फल पाय।
बोवे बीज बँबूलको, आम कहाँसे आय?"

'खोदे खाड़ सो पड़े आप'

तदनुसार सुनहरीके भाग्यने चक्कर खाया। उसे उसकी बदकारियोंका फल मिला। धन्नाकी माता कहीं चली गई। पीछेसे

मनोहरलाल आया और उसने इधर उधर चारों तरफ़ सुनहरीको देखा, उसे कई आवाजें भी दीं, मगर बोलता कौन? यदि कोई होता तब तो बोलता? मनोहरलालको भूखने बहुत सता रक्खा था। उसने कुछ खानेको ढूँढना प्रारंभ किया। ताकमें रक्खा हुआ लड्डू उसके नजर आगया। भूखा तो था ही, बेचारेने, बेसोचे समझे तत्काल ही खालिया। सच कहा है:—"भूख न देखे जूठा भात, इश्क न देखे जात कुजात" तदनुसार उसने भी लड्डूको इनसाफ़ दिया। मनोहरलालको क्या खबर थी कि उसमें प्राणघातक—विष मिला हुआ है? वह क्या जानता था कि उसकी जवान जोरूने, आज चम्पाको जगसे उठजानेका यह अन्तिम परवाना दिया है? उसे कब पता था कि लड्डूमें चम्पाको स्वर्ग पहुँचानेवाला सुनहरीका विष—दूत घुसा हुआ है? मनोहरलालने, नहीं २ जोरूके गुलाम मनोहरलालने, बेचारी भोली भाली देवीके तुल्य चम्पाको, अपनी युवतीके सिखानेसे, सतानेमें राक्षसको मात करनेवाले मनोहरलालने, अपने दुष्कृत्योंके फल भोगना प्रारंभ करनेका परवाना ले लिया। वह पानी पीकर दूकान पर गया। थोड़ी देरसे उसके शरीरमें आग लग गई। उसका सारा शरीर जलने लगा। जी घबराने लगा। वह दूकान बंदकर घर चला आया। सुनहरीने पूछा:—"क्या हाल है?" "ठीक नहीं है, जी घबराता है, चक्कर आते हैं, और बदनमें आगसी लगरही है।" मनोहरलालने उत्तर दिया। चम्पा भी अपने पिताके पास ही खड़ी हुई थी। वह दौड़कर धन्नाकी माँके पास गई और उसे कहा कि:—"तू जाकर किसी डाक्टरको बुलाला।"

धन्नाकी माँ दौड़कर एक डाक्टरको बुलालाई । डाक्टर दवा देकर चला गया, मगर उससे कुछ फ़र्क नहीं पड़ा । मनोहरलालकी बेचैनी बढ़ती ही गई । बेचारी चम्पा अपने पिताकी हालत ज्यादा ख़राब होती देखकर महल्लेमें दौड़ी गई और एक पड़ौसीको बुलालाई । धीरे २ मनोहरलालके बीमार होनेकी खबर सारे महल्लेमें फैल गई । महल्लेके बीसियों स्त्री पुरुष जमा हो गये । चम्पाके रोनेसे एक मनुष्य अस्पताल (Hospital) चला गया और वहाँसे बड़े डाक्टरको बुला लाया । डाक्टरने आकर रोगीको देखा और एकदमसे चिल्लाकर कहाः—" ग़जब हो गया । हालत नाजुक है । विषका असर रग रग और रेशे रेशेमें हो गया है । " डाक्टरकी बात सुनकर सब चित्रामके हो गये । सब डाक्टरके मुँहकी ओर ताकने लगे । चम्पा जोरजोरसे रोने लगी और डाक्टरके पैरोंमें गिरकर कहने लगी:—"डाक्टर साहिब, मैं आपके पैर पकड़ती हूँ, आपसे हाथ जोड़ती हूँ, आप कृपा करके मेरे पिताको आराम कर दीजिए । " डाक्टरने चम्पाको सान्त्वना देकर मनोहरलालसे पूछाः—" कहो आज तुमने क्या खाया है ? " यद्यपि मनोहरलालकी हालत खराब हो रही थी, तथापि ऐसी खराब नहीं हुई थी, कि वह बोल भी न सके । क्योंकि वह जहर चूहोंके मारनेका था और खाया भी थोड़े प्रमाणमें गया था इस लिए वह धीरे धीरे अपना असर कर रहा था । अतः मनोहरलालने धीरेसे कहाः—" आज मैंने एक लड्डू जो हमारी रसोईघरके बाहिरवाली ताकमें पड़ा हुआ था, खाया है । उसके सिवा और कुछ नहीं खाया । " लड्डूका नाम सुनते

ही सुनहरीके मुहँसे एक आह निकली। मगर गड़बड़में किसीने नहीं सुनी। अब सुनहरीकी अजब हालत थी। इधर उसे मनो-हरलालके मरनेका फिक्र था, उधर अपनी बातके प्रकट हो जानेका खयाल था। अन्तमें उसने अपने आपको सँभाला और बोली:-
"क्या लड्डू खाया था? यहाँ लड्डू कहाँसे आया? हाय! किसी दुष्टने तो यह कारस्थानी नहीं की है?" यह कह कर सुनहरी रोने लगी। चम्पापर यद्यपि मनोहरलालने बहुत अत्याचार किये थे, यद्यपि उसको इसने बहुत सताया था, तथापि चम्पाके हृदयमें अपने पिताका बहुत ही प्रेम था। अतः वह अपने पिताकी बगलमें मुँह रख कर रोने लगी। मनोहरलाल चाहे कितना ही राक्षसी कार्य करता था, चाहे कितना ही उसने अपनी पुत्रीको-सुनहरीके सिखानेसे और उसका मन रखनेके लिये-दुख दिया था; पर फिर भी उसे अपने खून पर प्रेम आगया। उसके हृदयमें पवित्र प्रेम, स्वर्गीय पितृ-प्रेमने जोश मारा, उसे अपनी पुत्रीके एक एक करके सब गुण याद आये। उसे धीरे २ अपने अत्याचारोंका भी स्मरण होने लगा। जैसे जैसे उसे अपने दुष्कृत्योंका स्मरण आता जाता था, वैसे ही वैसे उसकी आँखोंसे आँसू बहते जाते थे। आखिर एकाएक वह चार-पाई पर उठ बैठा। उस समय, उसमें पूर्णशक्ति आगई हो ऐसा मालूम होता था। उसने पुत्रीको हृदयसे लगाकर उसका सिर चूमा और वह कहने लगा:-"बेटी! तेरा कल्याण हो। मेरी गुणियल बालिका! मैंने तुझे इस दुष्टाके सिखानेसे बहुत सताया है। मैं क्या करूँ? बेटी! मेरी सारी बुद्धि इसने भ्रष्ट करदी थी। इसने

मेरी बुद्धि पर पर्दा डाल दिया था। हाय! पुत्री! मैं तेरे लिए कुछ न कर सका। पुत्री! तू अपने बूढ़े बापको क्षमा कर। हाय! बेटी, देख देख सामने तेरी माँ गोमती खड़ी हुई मेरे पर बड़ी तीव्रताके साथ आँखें निकाल रही है। बेटी! मुझे बचा। हाय! मैं जानता हूँ कि इस दुष्टाने तुझे सतानेके लिए क्या क्या नहीं किया है? हाय! इसने मेरी इज्जतको भी पानीमें मिलाकर तेरा सर्वनाश करना सोचा था। बेटी! देख तू जानती है या नहीं? अपने घरमें इसका भाई नाहरसिंह बहुत आता जाता है। इसने मेरा सारा घर बर्बाद करके अपने भाईको धनी बनाया है। और हाय! " बोलते २ बूढ़े मनोहरलालको गश आगया और चार पाई पर लेटते ही उसका—जीव हंस इस देहपंजरको छोड़कर सदाके लिए चल दिया।

घरमें कोहराम मचगया। चम्पा दहाड़े मार मार कर रोने लगी। डाक्टर चला गया। पुलिसको खबर लगी। वह मनोहरलालके घर पहुँच गई और उसने घरकी तलाशी लेना प्रारंभ कर दिया।

सारे घरको उथल पाथल कर डाला मगर कहींसे कुछ न मिला। अन्तमें चम्पाकी पेटी खोली गई। पेटीका सारा सामान निकालनेपर अन्दरसे विष निकल आया। थानेदारने चिल्लाकर कहा:—" देखो देखो यह जहर निकला।" सुनते ही चम्पाका चहरा पीला पड़ गया। उसका रोना न मालूम कहाँ हवा हो गया। वह बैंतकी तरह खड़ी हुई धूजने लगी। सुनहरी एकदमसे चम्पा पर झपटी और उसने उसके मुँहपर पाँच चार तमाचे रसीद कर दिये। पुलिसने उसे रोकी। वह कहने लगी:—" पड़ी न अब तो तेरे कलेजेमें शान्ति?

आखिर बापको मारके ही रही । अरी उन्होंने कब तुझे अपने ....के पास जानेसे रोका था, जिससे तूने उन्हें जहर खिलाया। दुष्टा ! मैं आज ही थोड़ी देर बाहिर गई थी और आज ही तूने उन्हें आखिर यमपुर पहुँचा ही दिया।" यह कह सुनहरी फूट २ कर रोने लगी। सत्य है:—

स्त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं,
देवो न जानाति, कुतो मनुष्यः।

यही कहावत सुनहरीने चरितार्थ कर दिखाई। यद्यपि थानेदार जानता था कि लड़की भोली और सीधी है, मगर वह यह भी विश्वास नहीं कर सकता था, कि सुनहरी अपने पतिको जहर खिलाकर मारदेवे। थानेदार बड़ी चिन्तामें पड़ा वह थोड़ी देर कुछ स्थिर नहीं कर सका। मगर आखिर उसे किसी न किसीको तो इस कार्यका दोषी अवश्य खोजना ही पड़ता। दूसरे चम्पाके विरुद्ध खासा प्रमाण भी दोषी होनेका मौजूद था फिर वह कैसे उसे छोड़ देता? अतः लाशको डाक्टर साहबके पास जाँचके लिए भेजकर उसने चम्पाके हाथोंमें हथकड़ी डलवादी और आप उसे लेकर थानेमें चला गया।

थानेदार बार बार चाहता था, कि वह चम्पाके प्रतिकूल रिपोर्ट लिखकर उसे मजिस्ट्रेटके सामने पेशकरे और चम्पापर बाकायदा केस चलावे, मगर उसका हृदय साथ नहीं देता था, लेखनी बार बार हाथसे गिर जाती थी। मगर अन्तमें उसने अपना दिल कड़ा किया और रिपोर्ट लिख उसे फौजदारीमें चालान करदी।

हाय ! मनुष्यको इस साढ़ेतीन तसुकी थैली भरनेके लिए अपना हृदय भी बेच देना पड़ता है। न्याय करनेके लिए बाह्य कारणोंका ही अवलम्ब किया जाता है। भगवान् कब वह दिन आवेगा कि न्यायाधीश अवधिज्ञानी या, अन्तर्ज्ञानी होंगे और वे भारतसे-नहीं २ सारे ही संसारसे बाह्यकारणोंको देखकर न्याय देनेके बजाय अन्तरंगकी असली बात देखकर फैसला करने लगेंगे। खैर।

मजिस्ट्रेटके सामने मुकदमेकी तहकीकात प्रारंभ हुई। चम्पाने मजिस्ट्रेटके पूछने पर कहा कि वह उस मुआमिलेमें कुछ नहीं जानती। उसकी पेटीमें जहर कहाँसे आया सो भी वह नहीं बता सकती।

सुनहरीने कहाः–" धन्नाकी माँने मुझसे कहा था कि, चम्पा तुझे और तेरे पतिको मारनाचाहती है। कारण उसने यह बताया था कि हम चम्पाको स्वछंदता पूर्वक विचरण नहीं करने देते हैं और वह चाहती है कि वह स्वच्छंद होकर जहाँ चाहे वहाँ फिरती फिरे। घटनावाले दिन मैं पड़ौसीके यहाँ किसी आवश्यकीय कार्यके लिये गई हुई थी।" मजिस्ट्रेटके पूछने पर उत्तर दियाः– "आवश्यकीय कार्य मेरे पीहरकी एक स्त्री आई हुई थी उससे मिलना था। तालियाँ धन्नाकी माँको दे गई थी। धन्नाकी माँने तालियाँ चम्पाको दे दीं; क्योंकि चम्पा पाठशालासे उनके पहिले ही आगई थी। फिर चम्पाने जहरका लड्डू बनाकर बाहिर ताकमें रखदिया और तालियाँ धन्नाकी माँको देकर वापिस कहीं चली गई। फिर वे घरपर आये; मगर धन्नाकी माँ उन्हें नहीं मिली। उन्हें भूख

जोरकी लग रही थी। इसलिये उन्होंने वह लड्डू खा लिया और वे अन्तको मरणासन्न हो गये। चम्पाकी पेटीसे ज़हर मेरे सामने निकला है।"

धन्नाकी माँने भी सुनहरीके बयानकी ताईदकी और कहाः— "चम्पा मुझे अक्सर कहा करती थी कि मैं एक न एक दिन अवश्य मनोहरलालको और सुनहरीको मारूँगी तब रहूँगी। क्योंकि ये मुझे बहुत ही दुःख दिया करते हैं।" मजिस्ट्रेटके पूछने पर कहाः— "उसने मुझसे यह भी कहा था कि मैं उन्हें किसी ऐसे जहरसे मारूँगी जिससे किसीको पता न चले कि ये किससे मरे हैं।

हाय ! बेचारी चम्पा आज निराधार खड़ीहुई चित्रामकी पुतलीसी दिखाई देरही है। उसका संसारमें आज कोई मददगार नहीं है। नीचे जमीं और ऊपर आकाशके सिवा कोई उसका अवलम्ब नजर नहीं आता है। उफ रे ! संसार तेरी चाल। वाहरे ! काल तेरी कूट गति ! जो अपराधिनी है वह आज सच्ची बनी खड़ी है और जो सच्ची है वह अपराधिनी बनी हुई आँखोंसे जमीन खोद रही है। ऐसा जान पड़ता है, कि वह नेत्र बाणोंसे पृथ्वी खोद उसमें समाजाना चाहती है। मगर पृथ्वी भी ऐसी कहाँ है कि वह तत्काल ही फट जाय और इस पवित्र बालिकाको अपनी गोदमें सुलाले। नहीं भविष्य उसे मालूम है। वह भावीमें कुछ उसकी भलाई होती देख रही है, इसी लिए उसने चम्पाको अपनी गोदमें नहीं ली है। मजिस्ट्रेटने मुकदमा दौरा सुपुर्द किया। और दौरेसे उसे फाँसीकी आज्ञा हो गई।

तेरहवाँ परिच्छेद।

पाप छिपाया ना छिपे, छिपेतो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रेह, रूई लपेटी आग॥
इलाही खैर कीजो, आज दम रुक रुकके चलता है।
कोई बैठा हुआ दिलमें, कलेजेको मसलता है॥

पाठक जानते हैं, कि गोपाल अलाहाबाद कालिजमें पढ़ता है। संध्या होने वाली है। सूर्यनारायण शनैः शनैः पद पात करते हुए अस्ताचलकी ओर गमन कर रहे हैं। गोपाल भी फुटबाल खेलकर वापिस चला आरहा है। आज अपने आप ही उसका मन उदास होता जारहा है। वह बहुत चाहता है, कि उसका मन अपने साथियोंकी बातोंमें लगकर बहल जाय, मगर वह बिलकुल नहीं बहलता। उसके चहरे पर बराबर उदासी बढ़ती जा रही है। किसीकी भोली भाली सूरत उसके हृदयमें आकर विवशा हरिणीकी तरह झाँक रही है। उसकी आहें आआकर उसके कानकी झिल्लियाँ फाड़रही हैं। किसीका अदृश्य सिसक सिसककर रोना उसका कलेजा मल रहा है। गोपालने इसी हालतमें बोर्डिङ्ग पहुँच कमरा खोला और वह लेम्प जलाकर पुस्तक पढ़ने लगा। मगर उसे पढ़ता कौन? क्योंकि दिल तो एक ही है। और वह इस समय कहीं अन्यत्र सैर कर रहा है। वह

तो किसीकी भोली भाली सूरतपर पड़कर बलखाते हुए बालोंमें उलझ रहा है। तब भला पुस्तक किस काम की ? वह पुस्तक वापिस रख चारपाई पर लेट गया और न मालूम किस उतार चढ़ावमें गोते खाने लगा। कभी उसका चहरा खिलजाता था, कभी दुःखसे मलिन दिखाई देने लगता था और कभी गंभीर विचार उसके हृदय-में उठता हुआ दृष्टिमें पड़ता था। इतनेहीमें एक मित्रने आकर उसके कमरेका दर्वाजा खोला और कहाः—"गोपाल ! क्या तुमने आजका लीडर Leader पढ़ा है ?" "नहीं आज क्या मैं तो कभी पढ़ता ही नहीं हूँ" गोपालने उत्तर दियाः—"कहो क्या कोई नई खबर है ?" मित्रने कहाः—"भाई ! नवीन खबर क्या ? बेचारी चम्पा! ...." चम्पाका नाम सुनते ही वह एकदम उठ बैठा और कहने लगाः—"हाँ ! हाँ ! कहो तुम बोलते हुए क्यों रुक गये ? चम्पा-का क्या हुआ ?" मित्रने बिना कुछ उत्तर दिये, जहाँ चम्पाके मुक़दमेका हाल और फ़ैसला लिखा था वहाँ उँगली रक्खी और लीडर गोपालके सामने कर दिया। गोपालने लीडर पढ़ा। उसमें न मालूम क्या हृदय--वेधक खबर थी कि जिसके पढ़ते ही गोपालके सिरने चक्कर खाया और वह धमसे चारपाई पर गिरपड़ा। मित्रने दौड़कर उसके मुँहपर हवा करना प्रारंभ किया। थोड़ी देरमें गोपा-लको होश आया। वह बड़बड़ाने लगाः—"चम्पा! आखिर तूने मुझे छोड़ ही दिया। अच्छा ! क्या सचमुच ही तेरा हृदय इतना पापी हो गया है ? क्या वास्तवमें तूने अपने बापको विष दिया है ? हाय रे ! संसार ! कौन कह सकता है, कि चम्पाके

विष नहीं दिया है ? जब कि उसकी पेटीसे विष निकला है । हाँ ! हाँ ! आखिर मानवी हृदय ही तो है । दुखी होकर जीमें आगया होगा, और ऐसा दुष्कृत्य भी उसने कर लिया होगा । " इतने-हीमें उसके हृदय-श्रोत्रमें किसीके रोनेकी आवाज़ आई:-" गोपाल ! प्यारे गोपाल ! आ एकवार तो मुझे दर्शन दे । आज सारा संसार मुझसे घृणा कर रहा है । दुनिया मेरेपर थूक रही है । लोग मुझे दोषी समझ रहे हैं । गोपाल ! गोपाल ! क्या तू भी मुझे दोषी समझेगा ? हाय ! भगवान् यदि गोपाल ही मुझे दोषी समझने लगेगा तो फिर मेरा विश्वास करने वाला संसारमें कौन होगा ? नाथ ! गोपाल मेरा अविश्वास करे इसके पहिले ही मुझे मौत दे देना । नहीं २ मुझे परसों फाँसी मिलेगी । चलो अच्छा ही हुआ । सब दुखोंसे छुटकारा मिला । हे दिल ! तू धड़कता क्यों है ? क्या तुझे और कष्ट उठाने हैं ? हाँ समझी । गोपाल ! हाँ ! हाँ ! ! मेरे प्राणदाता गोपाल ! गोपाल ! आ अब उद्धार नहीं चाहती, तेरी सहायता नहीं चाहती केवल दर्शन-तेरा दीदार........ " गोपाल झट चौंक कर उठ बैठा और चारों तरफ आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगा । मगर उसे कुछ दिखाई नहीं दिया । तब वह बोला;-" क्या मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ ? हाँ ठीक है स्वप्न ही है । नहीं २ स्वप्न नहीं हो सकता । वह देखो चम्पाकी भोली भाली आँखें डगर डगर मेरी ओर देख रही हैं । नहीं चम्पा ! नहीं; धीरज रख । मैं तुझे शीघ्र ही आकर छुड़ाऊँगा । तू हरगिज़ इतनी कठोर हृदया नहीं बन सकती । विश्वास रख, मैं कभी तुझे दोषी नहीं समझूँगा । क्या परसों सवेरे ही

चम्पाको फाँसी मिलनेका दिन नियत हुआ है ? अच्छा ! मुझे अभी ही रवाना होकर दिल्ली पहुँचना चाहिए। "

गोपाल उसी समय जानेकी तैयारी कर, प्रिंसिपालसे एक सप्ताहकी छुट्टी ले, स्टेशनपर आया और रातको दस बजेकी पैसेंजरसे रवाना होकर दूसरे दिन संध्याको छः बजे दिल्ली पहुँच गया।

इस समय गोपाल शिकारी कपड़ेकी ड्रेस पहिने हुए था। इसकी चालढालसे हरएक यह समझ सकता था, कि यह कोई सिपाही जा रहा है।

इसने मलका-गार्डनके फाटकमें पैर रक्खा इतनेहीमें उसके कानमें आवाज आई:-"देखा ! अन्तमें सुनहरी अपने पतिको मारके भी चम्पाका नाश किये विना न रही।" यह आवाज इसके आगे जानेवाली दो प्रौढ़ा स्त्रियोंमें से एक की थी। उनकी सूरत शकलसे उनके रंग-ढंगसे और उनके वार्तालापसे ऐसा विदित होता था कि ये दोनों कोई........थीं।

गोपाल भी चम्पाके विषयकी बात सुनकर शनैः२ दबे पाँओं उनके पीछे २ चलने लगा। उन दोनोंमें अपनी बातोंका सिल सिला जारी था।

दूसरीने उत्तर दिया:-" नहीं री ! अब सुनहरी सुखी थोड़े ही रह सकती है। यद्यपि वह पहिलेसे अब स्वच्छंद बहुत हो जायगी यह बात ठीक है; परन्तु अब उसे कुछ भय भी तो रहेगा। पहिले तो वह कुछ भी कर लेती, मगर कोई उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखनेवाला भी नहीं था; क्योंकि सब मनोहरलालसे डरते

थे। मगर अब उसको हर तरहका खयाल रखना पड़ेगा, अगर खयाल नहीं रक्खेगी तो खता खायगी। हाँ, एक बात और भी तो है। पहिले तो मनोहरलाल खासा कमाई करता था जिससे सुनहरी खूब खाती पहिनती थी और अपने यार दोस्तोंको व हमें तुम्हें भी खिलाती पिलाती थी और ऐश उड़ाती थी, मगर अब वह कहाँसे पैसा लायगी? और मौज कैसे उड़ायगी?"

पहिली:—"हैरी धन्नाकी माँ, तो क्या चम्पाका कुछ भी दोष नहीं है? तुझे मेरे सिरकी सौं है (शपथ है) तू सच सच बतादे। मैं तो बड़े चक्करमें पड़ रही हूँ। कभी तो तू कुछ कहती है और कभी कुछ। कभी कहती है कि सुनहरीने ही मनोहरलालको मारा है और कभी ऐसी बातें कहती है जिससे यह प्रगट होता है कि चम्पाने ही बेचारे मनोहरलालको जहर खिलाया है। (एक निश्वास डालकर) था तो बेचारा बड़ा ही अच्छा आदमी। मुझे भी दो चार बार उसने इनाम दिया था।"

दूसरी:—"क्या बताऊँ?" कुछ सोचकर "यदि किसीसे न कहे तो बताऊँ।"

पहिली:—"नहीं २ ऐसा भी कहीं हो सकता है? सूरज पूर्वसे पश्चिममें उगने लग जाय तब भी मैं अपने दिलकी बात किसीसे न कहूँ।"

दूसरी:—"अरी बात तो यह है कि सुनहरीने मुझसे चूहोंको मारनेका जहर मँगवाया था और उसमें से आधा तो उसने चम्पाकी पेटीमें रख दिया और...." पीछे देखकर बोलती बोलती रुक गई। पहिलीने

पूछा:—"फिर" दूसरी बोली:—"चुप रहे पीछे कोई आरहा है।" दोनों चुपचाप जाने लगीं। गोपाल भी थोड़ी देर चुपचाप इस ढँगसे चलने लगा जिससे यह विदित हो कि उन स्त्रियोंकी बातों पर उसका कुछ ध्यान ही नहीं है, ताकि वे और आगे बातें करें, मगर उसका ढँग व्यर्थ हुआ। फिर दोनों कुछ न बोलीं। बागसे बाहिर निकल जानेका दूसरा फाटक नजदीक आगया। गोपाल झटसे कदम बढ़ाकर उनके आगे जा खड़ा हुआ और जरा रौबके साथ बोला:—"बताओ, अभी तुम क्या बातें कर रही थीं?" दूसरीने गोपालको पहिचान कर लड़खड़ाती हुई ज़बानसे कहा:—"कुछ नहीं।" सुन-कर, गोपालकी आँखें मारे गुस्सेके लाल हो गईं, वह डपटकर बोला:-"हरामज़ादी! बदज़ात! क्या कहा? कुछ नहीं! मुझे पहिलेहीसे सब पता चल गया है। अब भी यदि तू अपना भला चाहती है तो सच सच बतादे। अन्यथा तुझे भी सुनहरीके साथ फाँसी चढ़ना पड़ेगा। मारे बैतोंके तेरी चमड़ी उधेड़ दी जायगी, और तेरी ऐसी बुरी गति बनाई जायगी कि जिससे तेरे जैसी और बदमाश औरतें भी नसीहत पाएँगी।"

गोपालकी बातोंसे दोनों खड़ी हुई बैंतकी तरहसे काँपने लगीं। उनके चहरे फक़ हो गये। दोनों टकटकी लगाकर गोपालके पैरोंकी तरफ देखने लगीं। गोपालने इस मौक़ेको अच्छा समझा। वह कुछ शान्त होकर बोला:—"धन्नाकी माँ, तू कुछ मत घबरा। अगर तू सब बातें सचसच बता देगी तो मैं तुझे छुड़वा दूँगा। इतना ही नहीं बल्के तुझे पचास रुपये इनाम भी दूँगा।"

पाठक जानते हैं कि औरतोंका हृदय कितना कोमल होता है। भयकी तो ये साक्षात् पुतलियाँ ही होती हैं और फिर रुपयोंका लालच। जिस रुपयेने संसारमें बड़े २ अत्याचार किये, जिस रुपयेने एक राष्ट्रको दूसरेसे लड़ा दिया, जिस रुपयेने भाइयोंमें फूट करवादी, जिस रुपयेने वंशके वंश बर्बाद करवा दिये। वही रुपया क्या यह संभव है कि धन्नाकी माँको, जो स्वभावसे ही पैसेके खातिर अपनी इज्जतको बेच देनेवाली है, न लुभाता? आखिर धन्नाकी माँने सब बातें बतादीं, और उसने गवाह बनना स्वीकार कर लिया।

गोपाल अपने घर गया। धन्नाकी माँको भी अपने साथ ले गया। माता पिताको उसने सारा हाल सुनाया। दुर्गादेई और हुकमचंद्र बड़े ही खुश हुए। फिर दोनो बाप: बेटे मिलकर एक बैरिस्टरके पास गये। बैरिस्टरने २०००) रुपये लेने किये, और कहा कि हम कल चम्पाको फाँसीपरसे उतरवा लावेंगे। अभी तुम पुलिसको सूचना मत देना। उसने ऐसा क्यों कहा? सो हम नहीं समझ सकते। हम तो खयाल करते हैं उसने शायद अपनी प्रसिद्धिके लिए ऐसा किया था। कुछ भी हो। दोनों बाप बेटे आशा हृदयमें रक्खे वापिस घर लौट गये। और रातको धन्नाकी माँकी भी उन्होंने खूब ही खातीर की।

चौदहवाँ परिच्छेद

जुल्मकी टहनी कभी फलती नहीं।
नाव कागजकी कभी चलती नहीं॥



पौ फटी। सूर्यके आगमन समाचारसे सारा संसार जाग गया। चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। मयूर बोलने लगे। कोयलें गाने लगीं। लोगोंके झुण्डके झुण्ड जेलखानेकी ओर जाते हुए दिखाई देने लगे। कोई दुखी है, कोई प्रसन्न है, किसीका चहरा खिल रहा है, कोई मलिन मुख दिखाई देता है। क्यों? इसका उत्तर पाठक स्वयं ही सोचलें।

फाँसीका स्थान इस समय बड़ा ही भयावना दिखाई दे रहा है। हजारों लोगोंके उपस्थित होते हुए भी कहीं कुछ गड़बड़ दिखाई नहीं देती। सारे मनुष्य कान दबोचकर चुपचाप फाँसीकी टिकटी पर नजर गड़ाये खड़े हैं।

जिस जगह फाँसीकी टिकटी पड़ी है उसके नीचे एक गड्ढा खुदा हुआ है। गड्ढेके दोनों तरफ बड़े बड़े डंडे गड़े हुए हैं। एक डंडा उसके ऊपर लगा हुआ है। उस डंडेमें एक कड़ा है जिसमें रेशमका रस्सा लटक रहा है। उसके थोड़ी ही दूर पर जज, जेल-सुपरिंटेण्डेण्ट, जेलर और एक फौजी अफसर खड़ा है। इनको घेरेहुए लगभग दो तीन गार्दके हथियार-बंद सिपांही इधर उधर टहलते हुए लोगोंकी हरकतों पर दृष्टि रखा रहे हैं।

थोड़ी ही देरमें सामनेसे कोई आती हुई दिखाई दी । पाठक, यह तो वही हमारी नायिका है । उफ़ ! क्या परिवर्तन है ! कैसी शकल बनी है ! वह दमकता हुआ चहरा कैसा स्वच्छ सफेद हो रहा है ! अहा ! इसके पाँव न मालूम क्यों लड़खड़ा रहे हैं ? क्या इसे मौतका डर है ? नहीं २ वह मौतके नामसे तो बड़ी ही प्रसन्न है । तब उसके पैर क्यों लड़खड़ा रहे हैं ? सुनिये । वह अशक्त हो गई है । उसकी टाँगें बेंतकी समता करनेको तैयार हैं । इनसे शरीरका भार नहीं सहा जाता । मगर इस समय बेचारियोंपर दोका बोझा है; पाठक ! आश्चर्य क्यों करते हैं ? क्या आपको पता नहीं है, कि गोपाल भी चम्पाके हृदयमें छुपा हुआ है । उसका जीवन–सर्वस्व उसके सिर आँखोंपर बैठा हुआ है, और इसी लिए बोझेके ज्यादा होनेसे टाँगें लड़खड़ा रही हैं ।

चम्पा आहिस्ता आहिस्ता फाँसीके पास पहुँची । वह टिकटी पर चढ़ाई गई और उसे कहा गया कि तू परमात्मासे अपने पापोंकी क्षमा माँग । परमात्मा तुझे क्षमा करेगा और तू नरकमें जानेसे बच जायगी । लड़की अपने दोनों हाथ ऊँचे करके बोली:–" हे घट घट अन्तार्यामी ! हे क्षमासिंधो ! हे अशरण शरण प्रभो ! अब तेरे साम्राज्यसे न्याय उठ गया । तेरी क्षमासिन्धुता सब धूलमें मिल गई । तू अशरणोंको शरण देना भूल गया । सशक्तोंसे अश-क्तोंका नाश करवाने लगा । सर्वत्र Might is right (जिसकी लाठी उसकी भैंस) का क़ानून प्रचलित हुआ । जहाँ तहाँ सबल निर्बलोंका सर्वनाश करने लगे । प्रभो ! कहो कहाँ हो ? मैं किससे

प्रार्थना करूँ ? क्या तुम मुझे क्षमा करोगे ? छिः मुझे क्षमा नहीं चाहिए। मुझे भीख माँगना नहीं आता। मैं तो यह चाहती हूँ, कि यदि मैंने पाप किया है तो मुझे अवश्य दण्ड मिले। हाँ! हाँ!! अगर मेरे हृदयमें कभी भी कुछ बुरी वासना उत्पन्न हुई होगी तो मुझे ज़रूर प्राणान्त प्रायश्चित भोगना पड़ेगा। यदि मेरा हृदय शुद्ध है, यदि मेरा मन पवित्र है तो मुझे श्रद्धान है कि मैं हरगिज़ दण्ड न भोगूँगी। यदि मेरे आयु कर्मकी स्थिति बाकी है तो अवश्य इस रेशमी रस्सेके टुकड़े हो जाएँगे। क्या संसारसे कर्मकी सत्ता उठ जायगी ? नहीं, कभी नहीं। सुदर्शन सेठके लिए प्रकृतिके—सत्यके—परमात्माके जबरदस्त हाथोंने शूलीका सिंहासन बनाया था। क्या आज वही सत्य मेरे लिए अपने सबल हाथ न फैलायगा ? क्या वह आज मुझे षड़यंत्रकी फाँसीपर लटकनेसे न बचायगा ? अवश्य बचायगा।..................." चम्पा और कुछ कहना चाहती थीं, मगर वह रोक दीगई। उसका मुँह काले टोपेसे ढक दिया गया।

देखने वालोंके मुँहसे सर्द आहें निकलने लगीं। परमात्मा, राम, अरिहंत, अल्लाह आदि नाम लेकर हरेक अपने २ इष्ट देवका स्मरण करने लगा। जल्लाद भी टिकटीपर चढ़ गया और क़रीब ही था कि वह चम्पाके गलेमें रस्सा डाल देता। इतने हीमें भीड़ चीरकर दौड़ते हुए दो व्यक्ति यह चिल्लाते हुए आए। " ठहरो! ठहरो! फाँसी रोको! " इस आवाज़से सब चौंक उठे और आनेवाले व्यक्तियोंकी तरफ़ देखने लगे। वे भी तत्काल ही

पास पहुँच गये। पाठक, ये तो वेही हमारे पूर्व परिचित बैरिस्टर और गोपाल हैं। "लड़कीको फाँसीसे उतारो" बैरिस्टरने कहा:-"जहर देकर अपने बापको मारने वाली यह लड़की नहीं है। असली मुजरिमका पता चल गया है।" यह सुनकर जजने लड़कीको नीचे उतारनेकी आज्ञा दी। इतने हीमें वहाँ धन्नाकी माँको लिए हुए गोपालके पिता भी आ गये। धन्नाकी माँने सब सही वृत्तान्त, जैसा कि गत परिच्छेदोंमें पाठक पढ़ चुके हैं, सुना दिया। धन्नाकी माँ जिस दूकानदारके यहाँसे जहर लाई थी उसकी भी शहादत हुई। उसने भी घटनाके एक दिन पहिले धन्नाकी माँका चूहोंको मारनेके लिए जहर लेजाना बताया।

इस समय गोपालको और चम्पाको जो प्रसन्नता हुई वह वर्णनातीत है। सुनहरी गिरफ्तार करली गई। दर्शकोंके झुण्डने आकर इन्हें घेर लिया। चारों तरफसे चम्पाकी तारीफ और सुनहरीकी निन्दाके शब्द सुनाई देने लगे।

सेशनमें फिरसे मुकदमेकी तेहकीकात हुई और चम्पा छोड़ दीगई। जजने कहा:-"पवित्र बालिका! हमने तुझे निरर्थक बहुत सताया, इसका हमें दुःख है; मगर क्या किया जाता। प्रमाण सब तेरे प्रतिकूल थे। यद्यपि हमारा हृदय यह नहीं मानता था कि तू दोषी है; परन्तु कानूनने हमें विवश किया और हमने तुझे फाँसी देनेकी आज्ञा दी। सत्यकी देवी! जा अब तूं अपने घर जा। जो आज्ञा हमने तुझे सुनाई थी, जो दण्ड हमने तुझे दिया था, वही अब इस दुष्टा, इस

पतिभक्षिणी राक्षसी, इस स्वेच्छाचारिणीको देते हैं। जा, पुत्री, भगवान तेरा कल्याण करें।"

बोलते २ जजका हृदय गद्गद हो आया। उसकी आँखोंमें प्रेमके आँसू दिखाई देने लगे। चम्पाने जब सुना कि उसकी मौसी सुनहरीको फाँसीकी आज्ञा हुई हैं, तब वह एकदम काँपगई। उसकी आँखोंसे झर झर पानी झरने लगा। वह हाथ जोड़ घोकदे जजसे कहने लगी:—" जज साहिब! क्षमा करो! यह घातकी आज्ञा मत दो। मेरी मौसीका इसमें कुछ अपराध नहीं है। सब मेरे ही कर्मोंकी गतिका फल है। जैसा मैंने पूर्व भवमें किया था वैसा हीं मुझे फल मिला। मेरे कर्मोंकी जो उदयावली थी वह पूरी होगई। मौसीका इसमें क्या दोष है? जज साहिब क्षमा करो! मेरी मौसीको छोड़ दो। यदि मेरी मौसी भी मर जायगी तो फिर मेरा संसारमें कौन है? मौसीने जहर चूहोंको मारनेके लिए ही मँगवाया होगा। लड्डू भी चूहोंको खिलाने हीके लिए बनाया होगा। जहर भूलसे मेरी पेटीमें रख दिया गया होगा। पिताके मरनेसे दुःखके मारे भूल कर इसने मेरा नामले लिया था।...." कहते कहते चम्पाका हृदय मारे दुःखके भर आया। फिर उससे कुछ न बोला-गया। वह दौड़कर सुनहरीके गलेसे चिमट गई। सुनहरीका हृदय भी इस पवित्र बालिकाके प्रेमाश्रुओंसे धुलकर साफ होगया। उसके भी आँखोंसे पानी बरसने लगा। अहा! क्याही अनोखा समय था? घंटे भर पहिले जो सुनहरी चम्पाको अपनी जानी-दुश्मन समझती थी, वही अब उसे अपनी पुत्रीके तुल्य समझने लगी है और

जो घंटे भर पहिले चम्पाका सर्वनाश करनेमें आनन्द मान रही थी वही अब अपने दुष्कृत्योंपर चार चार आँसू बहाने लगी है। देखा पाठको, यह है कर्मकी लीला। यह है मानवी स्वभावका परिवर्तन। यह है सुशिक्षाका परिणाम। आज यदि चम्पाको उत्तम शिक्षा न मिली होती तो पाठकोंको कभी ऐसा दृश्य देखनेका सौभाग्य प्राप्त न होता। पाठको! यदि अपनी भलाई चाहते हो, यदि अपनेको सुखी बनाना चाहते और आनन्दसे कालयापन करनेके इच्छुक हो तो लड़कियोंको सुशिक्षा दो। जिससे वे भी चम्पाके तुल्य क्षमाशीला बनेंगी और चहुँ ओर आनन्द ही आनन्दका साम्राज्य दिखाई देगा।

दोनों थोड़ी देरतक रोती रहीं। फिर सुनहरी धैर्य धरके बोली:— "चम्पा! अब तू दुखी मत हो। तू आनन्दसे अपना कालयापन कर। भगवान तेरी रक्षा करेंगे। मैंने जैसा किया था वैसा फल मुझे मिला। क्या कभी संभव है कि कोई बुराई करके—दूसरेको हानि पहुँचानेका प्रयत्न करके—लाभ उठाले? हरगिज़ नहीं। पुण्यमयी चम्पा! तेरा कल्याण हो। मैंने तुझे सैकड़ों कष्ट दिये हैं, हज़ारों तरहके झूठे झूठे तेरे सिर कलंक लगाए हैं। चम्पा, उन सबको अब भूल जा। मुझे शुद्ध हृदय होकर क्षमा कर। मैं साफ़ दिल होकर आज तुझसे क्षमाकी प्रार्थना कर रही हूँ। पुत्री! मुझे शुद्ध धर्मशिक्षा नहीं मिली थी। मैंने नैतिकज्ञान नहीं सीखा था। हाय! उसीसे मेरा पतन हुआ और आज मैं मनुष्य-वध तकके घृणित कार्य करने पर भी उतारू हो गई, जो कि महानिन्द्य है। अफसोस!

यदि मेरे भाई रुपयेके लालचमें पड़कर तेरे वृद्ध पिताके साथ मेरा ब्याह न करते तो कदापि मेरी ऐसी दशा नहीं होती। हरगिज मैं नीच कृत्योंके करने पर और तुझे सताने पर उतारू नहीं होती। खैर, चम्पा! जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। हमारी हालतोंसे लोग अवश्य शिक्षा लेंगे। मेरे कुकृत्योंको याद करके लोग वृद्ध विवाह करनेसे बचेंगे और तेरी सहनशीलता उदारता और क्षमापरायणताको देख सब अपनी पुत्रियोंको शिक्षिता बनावेंगे।..........." इतने हीमें पुलिसके सिपाहीने आकर चम्पाको सुनहरीसे भिन्न करना और सुनहरीको छुड़ाना चाहा। चम्पा उसे छोड़नेके बजाय उससे गाढ़ी चिमट गई और जार जार रोने लगी। चम्पाकी अपने प्राण लेने वालीके प्रति ऐसी प्रीति देखकर दर्शकोंके हृदय आनन्दित हो आये। सारे चम्पाको साधुवाद देने लगे। सेशनके हृदय पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उसने भी चम्पाके समान ही सुनहरी पर उदारता दिखाई। जजने चम्पाकी ओर झुककर कहा:—"उदार बालिका! आज तेरी उदारताने सेशनको भी उदार बना दिया। अतः सेशन तेरे खातिर तेरी मौसीको फाँसी देनेके बजाय दस बरस काले पानीकी आज्ञा देती है। अब तू इसे जाने दे और अपने किये दुष्कृत्योंका फल भोगने दे।"

इतना होनेपर भी चम्पाने सुनहरीको नहीं छोड़ी। पुलिसने जबर्दस्ती चम्पाको सुनहरीसे पृथक कर सुनहरीके हाथोंमें हथकड़ी डाली और वह उसे वहाँसे ले गई। कचहरी बर्खास्त हुई उप-

स्थित लोग सब चम्पाकी प्रशंसा करते हुए अपने अपने घर गये । गोपाल और उसके पिता हुक्मचंद्र भी खुशी २ अपने मकान पर आये । चम्पाको उसका मामा अपने घर लेगया ।

चलो पाठक हम भी सुशिक्षाकी और उसे आचरणमें लानेवाली चम्पाकी प्रशंसा करते हुए अपने आराम कमरे में चलकर आराम करें और आजसे प्रतिज्ञा करें कि हम भी अपनी संततिको सुशिक्षा दिलाये विना हरगिज न रहेंगे ।

उपसंहार



पाठक ! पाठिकाओ ! अब चम्पाका गोपालके साथ ब्याह हो चुका है। दोनों आनंदसे अपना काल बिता रहे हैं । चम्पाने एक छोटीसी पाठशाला खोलली है, जिसमें वह खुद ही व्यवहारिक और धार्मिक शिक्षा देती है । दिनमें बारह बजेसे तीन बजेतक पाठशालामें आने वाली विद्यार्थिनियोंको पढ़ाती है । पढ़नेवाली गृहिणियाँ और विधवाएँ आती हैं । उसने अपनी पाठशाला इसी हेतुसे खोली है, कि वह उन स्त्रियोंको शिक्षा दे जिन्हें गृह-स्वामिनियाँ हो जाने या विधवा हो जाने बाद कन्या-पाठशालाओंमें जानेका अवसर नहीं मिलता है ।

चम्पा पढ़ने लिखने सीने, पिरोने, कसीदा निकालने, और उत्तम २ भोजन बनानेकी शिक्षा देनेके अतिरिक्त उन्हें आध घण्टेके लग-भग सदैव व्याख्यान भी दिया करती है । उसमें वह कहा करती है:—" मनुष्ययोनि संसारमें अपने जीवनको उन्नत स्थानपर पहुँ-

चानेके लिए प्राप्त हुई है । अतः हमें सबसे पहिले यह जानना आवश्यकीय है, कि उन्नत स्थान क्या है ?

बहिनो ! संसारमें सर्वोत्कृष्ट स्थिति—उत्तमसे उत्तम दशा—यदि कोई है, तो वह यह है कि अपने आपको हम सारी वासनाओंसे भिन्न कर लेवें, हमारे हृदयसे मेरा, तेरा, उसका आदि जो कुभाव हैं वे उठ जावें, सारे संसारको हम अपने ही समान अनुभव करने लगें, सब जीवात्माओंके अन्दर ईश्वरीय-सत्ता मौजूद है, यानी ईश्वर बननेकी शक्ति हर एक आत्मामें स्थित है, वही शक्ति हमारे अन्दर भी है; मगर कर्मावरणोंके सबबसे हमने बुरे कार्य (वे चाहे इस भवमें किये हों या पूर्व भवमें किये हों) किये हैं, उनके सबबसे हमारी वह शक्ति प्रकाशमें नहीं आती है; इस लिए प्रयत्न द्वारा, यानी शुभ कामोंके द्वारा बुरे कामोंके आवरणको हटावें और उस गुप्त शक्तिको प्रकाशमें लावें जो भाग्यकी—कर्मकी कर्ता, हर्ता और विधाता है ।

भगिनियो ! आजकल संसारका प्रवाह बिलकुल उल्टा होगया है । हमारी स्त्रीजातिकी बहुत ही दुर्दशा होने लगी है । इसका कारण हम खुद ही हैं । हमारे हृदयसे कर्तव्यबुद्धि जाती रही, हमारा पवित्र संसार व्यापी प्रेम विषयवासनाओंकी रस्सियोंसे बँध गया, हमारी परोपकारवृत्ति पर स्वार्थका पर्दा पड़ गया, हम अज्ञानके अँधेरे जंगलमें आकर अपने परायेको भूल गई और शारीरिक सुख भोगोंके पदार्थ संचित करनेके लिए हम परस्पर झगड़ने लगीं । वैसा ही हमें फल भी मिला, और हमारे स्त्रीसमाजकी दुर्दशा हो गई ।

बहिनो ! अब भी चेत जाओ । जो कुछ हो चुका है उसे भूल जाओ । अतीत समय कभी हाथ आनेवाला नहीं है । अब तो वर्तमान पर दृष्टि रख कर कार्य प्रारंभ करो । जो कुछ तुम्हारे पास निरुपयोगी—बरसों काममें न आकर पड़ी रहनेवाली—वस्तु है उसे दूसरोंको उपयोगमें लानेके लिए दे दो । जिसको तुम कुछ दो उससे कभी प्रतिउपकारकी आशा न रक्खो । इससे तुम्हारा और उसका दोनोंका भला होगा । तुम्हारा तो यह भला होगा कि तुम निरुपयोगी वस्तुको सँभालनेकी चिंतासे बचजाओगी, और उस समयको जो उस वस्तुके सँभालनेमें व्यर्थ खर्च होता है शुभ और धार्मिक कामोंमें लगा सकोगी । उसको यह लाभ होगा कि वह उस वस्तुको उपयोगमें लाकर अपने हृदयकी चिन्ता मिटा सकेगा । यह कार्य देखनेमें बहुत ही कठिन है, मगर आचरणमें लानेसे बिलकुल सरल हो जाता है । इसका प्रारंभ पहिले अपने स्वजन संबंधियोंसे करो और फिर उसे धीरे २ बढ़ादो ।

भगिनियो ! जब तुम्हारी, यह परोपकार वृत्ति—प्रत्युपकारकी इच्छारहित जनसमाजको लाभ पहुँचानेकी वृत्ति—हो जायगी, तो पीछेसे तुम्हें अपनी शक्तिका कुछ कुछ ज्ञान होने लगेगा, और उसी ज्ञानसे तुम धीरे धीरे उन्नतिक्रमके अन्तिम सोपान पर पहुँच जाओगी । ”

चम्पा इसी तरह अन्य भी कई बातोंकी शिक्षा दिया करती है । जिनका विस्तार-भयसे यहाँ उल्लेख नहीं करते हैं ।

वह गरीब स्त्रियों और असहाय विधवाओंकी अन्न वस्त्र आदिकसे भी सहायता किया करती है और शिक्षा दे देकर उन्हें इस योग्य बनानेका प्रयत्न करती है, कि जिससे वे भावीमें अपनी बहिनोंकी सेवा कर सकें और भारतमें फैली हुई इस दुर्दशाको—अज्ञान अन्धकारको—मिटानेका काम कर सकें।

पाठक पाठिकाओ! प्रार्थना करो कि चम्पाके तुल्य लक्षावधि लड़कियाँ भारतमें उत्पन्न हों और वे गृहस्वामिनियाँ बन गृहस्थीका काम अच्छी तरहसे चलाती हुई भारतमें शिक्षा प्रचारका कार्य करें, और भारतको स्वर्ग धाम बनावें।

बालिकाओ! भावीमें तुम ही गृह-स्वामिनियाँ बनोगी, और तुम्हारे ऊपर ही गृहस्थीके संचालनका भार पड़ेगा। अतः तुम चम्पाके चरित्रको अपने हृदयमें जमालो और अभीसे उसकी तरह परोपकारी बननेका प्रयत्न करो; क्योंकि बालपनसे मन जिधर झुक जाता है, फिर वह हमेशा उधर ही झुका रहता है। यदि तुम भी चम्पाके तुल्य बनजाओगी तो इस भवमें संसार तुम्हारा कृतज्ञ होकर यशोगान करेगा और परभवमें तुम्हें स्वर्गसुखकी प्राप्ति होगी।

ॐ शान्ति! आनन्द!! सौख्य!!!

प्रेममाला कार्यालय गोहाना।

प्रस्तुत पुस्तक मालाका दूसरा पुष्प है। पहिले हमने दलजीतसिंह नाटक दूसरा पुष्प होनेकी सूचना दी थी, परन्तु खेद है, कि प्रेसकी महरबानीसे वह नाटक अब तक न छप सका। अतः विवश हमने प्रस्तुत पुस्तक उस नाटकके बजाय रख दी है। यदि पाठकोंने हमारा उत्साह बढ़ाया तो हम और भी उत्तम २ पुस्तकें अपने पाठकोंके भेट करेंगे। तीसरा पुष्प दलजीतसिंह रहे[illegible] अब उसके केवल तीन फार्मही छपने शेष हैं। पहिला पुष्प 'महेन्द्रकुमार' नामक नाटक छप चुका है। उसकी उत्तम[illegible] ही प्रमाण है, कि एक [illegible] भरमें तेरहसौ कापियाँ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक बुराइयोंका विनोदा[illegible] रीतिसे बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। पत्र-संपादकोंने इसके विषयमें जो सम्मति दी है, उनमेंसे हिन्दी केसरीकी सम्मतिका हम यहाँ उल्लेख करते हैं। वह लिखता है:-" महेन्द्रकुमार यह नाटक बहुत ही शिक्षाप्रद है। श्रीयुत अर्जुनलाल सेठीकी योग्य लेखनीसे लिखा गया है...... । हिन्दी-नाटक-मंडलियोंसे हमारा अनुरोध है, कि वे इस नाटकका प्रचार करें और इसीके आदर्शपर नाट[illegible] लिखवावें तो हिन्दीका उपकार हो...... । मूल्य छः आना है। अंदर ले[illegible] फोटो है। प्रस्तुत पुस्तकके विषयमें हम कुछ कहना नहीं चाहते। हाथ कं[illegible] आरसीकी आवश्यकता नहीं है।

बाल-विवाहका एक हृदयद्रावक दृश्य—यह एक छोटासा ट्रैक्ट है। इसमें बाल-विवाहका कैसा बुरा परिणाम होता है सो दिखाया गया साथ ही बड़ी ओजस्विनी भाषामें बालकोंको छोटी आयुमें विवाह नेका उपदेश दिया गया है। ट्रैक्ट बालकोंको उपहारमें देने योग्य एक आना, सौप्रतियाँ ५) रुपयेमें।

नियम।

(१) जो स्थायी ग्राहक होते हैं उनको मालाका प्रत्येक पुष्प आर्ध दिया जाता है।

(२) आठ आना प्रवेश-फी जमा करानेवाले स्थायी ग्राहक समझे

मैनेजर.